वर्ष: 16 | अंक : 11 | नवंबर 2025 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश

श्री हंस जयंती
125 वर्ष

श्री हंस जयंती - **8** नवंबर पर
आपके पावन श्री चरणों में शत्-शत् नमन!

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-11
नवम्बर, 2025
कार्तिक-मार्गशीर्ष, 2082 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-।, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह
मूल्य-एक प्रति-रु.10/-
पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:
कार्यालय: हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074
मो. नं. : 8800291788, 8800291288
Email: hansloksandesh@gmail.com
Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction
RNI No. DELHIN/2010/32010

संपादकीय

साक्षात भगवान के रूप थे श्री हंस जी महाराज

हिमालय की गोद में स्थित उत्तराखण्ड क्षेत्र अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, मनोरम घाटियों, गीत गाते हुए झरनों एवं पावन तीर्थ-स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। वहीं यह उर्वरा भूमि अवतारी महापुरुषों की जन्म-स्थली के रूप में भी विख्यात है जिन्होंने भारत में भक्ति, ज्ञान, धर्म और मानव कल्याण की भावना को जागृत करने के लिए जीवन अर्पित कर दिया। इसी श्रृंखला में ज्ञान, भक्ति एवं मानव प्रेम का दिव्य संदेश समस्त भारतवर्ष में जन-जन तक पहुँचाने वाले योगिराज श्री हंस जी महाराज का प्रादुर्भाव 8 नवम्बर, 1900 को इसी पवित्र भूमि में हुआ। बाल्यकाल से ही वे एक विलक्षण बालक थे। हंसी की छटा इनके मुख मंडल पर सदैव गुलाब के फूल की तरह खिली रहती थी, इसलिए लोग प्यार से इन्हें हंसा-हंसा कहा करते थे। अनेक सिद्ध महापुरुषों की तरह इनकी भी बाल्यकाल की लीलाएं सबको विस्मय में डाल देती थीं। वे थे एक महापुरुष, योगी, साक्षात भगवान के रूप।

आत्मज्ञान की खोज में श्री हंस जी महाराज हर धर्म-सम्प्रदाय के प्रमुखों के पास गये और जो स्वत: उनको आन्तरिक अनुभव होते थे, उनके बारे में पूछते थे, लेकिन किसी ने भी उन्हें प्रत्यक्ष आत्म-अनुभूति का आश्वासन नहीं दिया। किन्तु अन्दर तो उस परमसत्ता के प्रत्यक्षीकरण की जिज्ञासा प्रबल हो चुकी थी। संयोगवश लाहौर में श्री महाराज जी की भेंट स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज से हुई जिनसे दीक्षा प्राप्त कर उनके जीवन का पूर्ण रूपान्तरण हो गया। वे अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों और तत्व-ज्ञान को सहज में समझ गए। सिद्ध पुरुष तो थे ही, केवल चिंगारी दिखाने की जरूरत थी और जैसे ही वे संत मिले, उनके भीतर का ज्ञान प्रकाशित हो उठा। तत्पश्चात अपने सद्गुरु महाराज के आदेशानुसार उन्होंने देशभर में भ्रमण कर इस अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। इस महनीय कार्य में उन्होंने कभी संसाधनों को आड़े नहीं आने दिया, वे पैदल, बैलगाड़ी, तांगा, साइकिल, रेल, बस, कार और आवश्यकतानुसार हवाई जहाज से भी यात्रा कर देशभर में घूम-घूमकर भूले-भटके जीवों के हृदयों में ज्ञान की ज्योति जलाते रहे।

आज वे अपने पंचभौतिक शरीर से भले ही हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु वे अपने भक्तों की रक्षार्थ सदा उपस्थित रहते हैं, जरा कोई निर्मल मन से उन्हें पुकार कर तो देखे। वह शाश्वत सत्ता जो हंस रूप में सभी जीवों में अनुप्राणित एवं सारे भूमण्डल में व्याप्त है, वही भक्तों को अलौकिक आनन्द देने के लिए एवं माया में भटके जीवों को सद्मार्ग पर लगाने के लिए महापुरुषों के रूप में प्रकट होती आई है, क्योंकि उस सत्ता का ज्ञान, वह स्वयं ही दे सकती है। ऐसे ही महापुरुष थे श्री हंस जी महाराज; जिनके माध्यम से उस महासत्ता ने अपने को प्रकट करके अनन्त जीवों का उद्धार किया। प्रेमीभक्त उन्हें आदर से श्री महाराज जी कहकर संबोधित करते थे, इस वर्ष उनकी 125वीं जयंती पर हम उनके पुण्य स्मरण के साथ उनके श्री चरणों में बारंबार नमन करते हैं। ■

युग प्रवर्तक श्री हंस जी महाराज : जीवन, दर्शन एवं उपदेश

हिमालय की गोद में स्थित उत्तराखण्ड क्षेत्र अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, मनोरम घाटियों गीत गाते हुए झरनों एवं पावन तीर्थ.स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। यह वही प्राचीनतम एवं पुनीत प्रदेश है, जहां बड़े-बड़े महापुरुषों एवं ऋषि-मुनियों ने जन्म लिया और तप किया। इस प्रकार यह स्थान जहां प्राकृतिक सुषमा और नैसर्गिक शान्ति के लिए विख्यात है, वहीं यह उर्वरा भूमि अवतारी महापुरुषों की जन्म-स्थली के रूप में भी विख्यात है जिन्होंने भारत में भक्ति, ज्ञान, धर्म और मानव कल्याण की भावना को जागृत करने के लिए जीवन अर्पित कर दिया। ऋषि-मुनियों एवं महान पुरुषों की इसी श्रृंखला में ज्ञान, भक्ति एवं मानव प्रेम का दिव्य संदेश समस्त भारतवर्ष में जन-जन तक पहुँचाने वाले योगिराज श्री हंस जी महाराज का प्रादुर्भाव इसी पवित्र भूमि में हुआ। श्री हंस जी महाराज का प्रादुर्भाव 8 नवंबर 1900 को उत्तराखंड के पावन पर्वतीय गाँव गाड़ की सेड़िया जिला पौड़ी गढ़वाल में हुआ था। उनके पिता श्री रणजीत सिंह रावत व माता श्रीमती कालिंदी देवी थीं। बचपन से ही उनके मन में अध्यात्म के प्रति गहरी जिज्ञासा थी। बाल्यकाल में ही वे साधुओं एवं संतों की संगति में रहने लगे थे और आत्मानुभूति की तृष्णा मन में निरंतर बनी रही।

8 नवम्बर, 125वीं श्री हंस जयंती पर विशेष

उनकी बाल-मनोवृत्ति सरल, सहज, करुण और सहृदय थी। गांव-परिवार के सामान्य वातावरण में उनका मन मानव-सेवा, वैराग्य और भक्ति की ओर आकृष्ट होता गया। सामाजिक विषमताओं, जातिवाद और पाखंड के मध्य वे सच्चे मार्ग की खोज में प्रखर भावनाओं के साथ अपने जन्म स्थान से बाहर निकले। सन 1922 में, लाहौर (तत्कालीन भारत) में श्री हंस जी महाराज को उनके जीवन के प्रामाणिक सतगुरु श्री स्वरुपानंद जी महाराज मिले, जिन्होंने उन्हें ब्रह्मज्ञान का व्यावहारिक उपदेश दिया। गुरु-सेवा, कठोर तपस्या तथा गहन साधना से उन्हें आत्मसाक्षात्कार हुआ। वे कहते थे- **"गुरु के बिना ज्ञान नहीं, और ज्ञान के बिना जीवन व्यर्थ है।"** वे संतों की वाणी सुनाते हुए समझाते थे- **"गुरु बिनु कौन बतावै बाट, बिना गुरु मिलै न ब्रह्म ठाठ।"**

गुरु के दिए उस अमूल्य **'ज्ञानयोग'** को आत्मसात कर वे जीवन-भर उस ज्ञान प्रसाद को जिज्ञासु मानवों को बिना किसी भेदभाव के बांटते रहे। उनके प्रवचनों की मुख्य अवधारणा थी- आत्मा-परमात्मा के एकत्व भाव को व्यावहारिक रूप से अनुभव करो। सत्संग, सेवा और सुमिरन करो। वे जात-पांत, ऊँच-नीच व संकीर्णताओं के भावों का आजीवन खंडन करते रहे। वे केवल सैद्धांतिक तर्कों से बचते हुए व्यावहारिक आध्यात्म में उत्थान को आदर्श मानते थे।

वे अधिकतर श्रीमद्भगवत गीता के आदर्श को रेखांकित करते हुए अर्जुन को युद्ध क्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा करते थे, जिसे सुनने के बाद अर्जुन अपने कर्त्तव्य पालन के लिए तैयार हो गए थे। 1930 के दशक में उन्होंने उत्तर भारत में उस दिव्य ज्ञान का प्रचार प्रारंभ कर दिया था। अनेकानेक स्थानों पर विचरण करते हुए उन्होंने सत्संग, ज्ञान उपदेश व जनजागरण का व्यापक अभियान प्रारंभ किया। वे अक्सर बैलगाड़ी, पैदल या अन्य सामान्य साधनों से गाँव-गाँव, गली-गली घूमकर प्रभु का अमृत-ज्ञान बाँटते रहते थे। वे हमेशा कहते थे कि "मानव जीवन दुर्लभ है, लेकिन वही जीवन सार्थक होता है, जिसमें सच्चे गुरु की शरण और प्रभु की प्राप्ति हो सके।"

उन्होंने हरिद्वार में एक आश्रम की स्थापना की; जो उनके जनकल्याणकारी कार्यों का स्थायी केन्द्र बना, इस आश्रम में ध्यान-मंडप, सत्संग-भवन, गरीबों के लिए भोजन आदि की सुविधा अनवरत रूप से संचालित की गई। उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक यह आश्रम मानवमात्र के लिए मार्गदर्शक केंद्र बना रहा। उनका संपूर्ण जीवन प्रेम, सेवा व सत्यज्ञान की अनुभूति का त्रिवेणी संगम की भांति पवित्र बना रहा।

योगिराज श्री हंस जी महाराज के ये प्रमुख संदेश हमेशा मानव मात्र को उपकृत करते रहेंगे। 'मनुष्य जाति श्रेष्ठ है; इसे व्यर्थ के मतभेद, ईर्ष्या, द्वेष और लालच से बचते हुए केवल मात्र प्रेम, सेवा और प्रभु भक्ति में ही जीवन को समर्पित करना चाहिए।' "श्री महाराज जी द्वारा प्रदत्त ज्ञान, संसार की संकीर्णता मिटाता है।" "मनुष्य का प्रधान उद्देश्य स्व-परिचय, स्व-उद्धार और आत्म-साक्षात्कार है।"

"सतगुरु दरस दिखाए, अंतर ज्योति जलाए।
प्रेम दीप जब दिल में जले, तमस सारा मिट जाए॥"
"राम नाम गुनगान कर, जीवन धन्य बना।"
"सतगुरु चरण कमल मन ध्याओ,
अविनाशी नाम लीजो।"

श्री हंस जी महाराज की शिक्षायें आज भी समरसता, भाईचारा और वास्तविक भारतीय आत्मा की ज्योति को प्रखर बनाए हुए हैं। उनका जीवन, विचार और उपदेश नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं, जिन्होंने पूर्ण श्रद्धा, साधना और सेवा के पथ से अध्यात्म की शाश्वत धारा को प्रवाहित किया है। आज भी अनेक भक्तों को श्री महाराज जी नाना रूपों में दर्शन देकर यह विश्वास दिलाते हैं कि अरे! मैं तो यही हूँ, पर तुम मुझे देख नहीं रहे हो। श्री हंस जी महाराज का पंचभौतिक शरीर यद्यपि आज इस धराधाम पर नहीं है, किंतु उनका चिन्मय स्वरूप निश्चय ही आज भी कार्यरत है। वह अपने भक्तों के रक्षार्थ सदा उपस्थित रहते हैं, जरा कोई निर्मल मन से उन्हें पुकार कर तो देखे। शरीर छोड़ने से कुछ महीने पहले श्री हंस जी महाराज का शाहदरा भोलानाथ नगर में सत्संग प्रोग्राम रखा हुआ था। उन दिनों श्री महाराज जी को घुटनों में वात रोग होने की वजह से काफी तकलीफ थी, इधर भक्त लोग काफी बेचैनी से इंतजार कर रहे थे। थोड़ी देर बाद श्री महाराज जी की कार आई। श्री महाराज जी नीचे उतरे और अपने घुटने दिखाते हुए हंसकर कहने लगे- वायु आ गई है, यह भोग तो महान पुरुषों को भी भोगने पड़ते हैं। यह शरीर अब पुराना हो गया है, इसलिए अब इसको हम छोड़ देना चाहते हैं। इसे छोड़ देने में कोई कष्ट नहीं होगा। जब कपड़ा पुराना हो जाता है, तो उसे उतारकर नया कपड़ा धारण कर लिया जाता है। गुरुदेव को शरीर से कुछ भी मोह नहीं था। शरीर छोड़ना उनके लिए वस्त्र बदलने से अधिक कुछ नहीं था। वे आत्म-स्वरूप थे।

वह शाश्वत सत्ता जो हंस रूप में सभी जीवों में अनुप्राणित एवं सारे भूमण्डल में व्याप्त है, वही भक्तों व संत पुरुषों को अलौकिक आनन्द देने के लिए एवं भटके हुए संसारी जीवों को सद्मार्ग पर लगाने के लिए यदाकदा महापुरुषों के रूप में प्रकट होती आई है। यही ईश्वरीय विधान है, क्योंकि उस सत्ता का ज्ञान वह स्वयं ही दे सकती है। इसलिए प्रकृति को अधीन करके वह नर रूप में अवतरित होती है। जब-जब भी मानव ने उस महासत्ता को पुकारा है, वह मानव रूप में प्रकट हुई। ऐसे ही थे श्री हंस जी महाराज जिनके माध्यम से उस महासत्ता ने अपने को प्रकट करके अनन्त जीवों का उद्धार किया।

श्री महाराज जी कहते थे कि अमीर से, गरीब मुझे ज्यादा पसन्द हैं। यह खूबी थी उनकी कि वे गरीब के यहां गरीब बन जाते और अमीर के यहां अमीर। वे बुजुर्गों के पास जाते रहते थे, उनका विचार लेते थे कि वे क्या कहते हैं, उन लोगों का क्या विचार है। उन्हीं की विरासत को संभाले हुए आज परमपूज्य श्री भोले जी महाराज व माता मंगला जी अपने जन कल्याण समारोहों के माध्यम से विश्व के कोने कोने में अध्यात्म का ज्ञान-प्रसाद बांट रहे हैं साथ में अनेक जनकल्याण के महान कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। हम सभी इस वर्ष युगप्रवर्तक योगिराज श्री हंस जी महाराज की 125 वीं जयंती पर अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए उनके आशीर्वाद की कामना करते हैं। ■

हीरा जनम अनमोल था, कौड़ी बदले जाय

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! यह मनुष्य शरीर हमें बड़े भाग्य से मिला है, इस तन को पाने के लिए देवता भी तरसते हैं। इस सुन्दर देव-दुर्लभ तन को पाने के बाद हमने यदि भगवान के सच्चे नाम को जानकर उसका सुमिरन नहीं किया, तो यह मनुष्य जन्म व्यर्थ चला जायेगा और आगे फिर चौरासी में जाना पड़ेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं-

लख चौरासी भ्रमदियां,
मानुष जन्म पायो।
कहे नानक नाम सम्भाल,
सो दिन नेडे आयो।

यह संसार माया का लोभी है और इसमें सभी लोग ममतारूपी एवं मोहरूपी महल को मजबूत बनाने में लगे हुए हैं। सब एक-दूसरे को माया के कारण ही प्यार करते हैं और मोह के कारण ही मनुष्य धनरूपी माया को जमा करने में लगा रहता है। कोई बिरला ही माया-मोह रूपी भूल-भूलैया के महल को तोड़कर बाहर निकलता है अन्यथा सब उसी में फँसे रहते हैं। अमेरिका के प्रेसीडेन्ट रूजबेल्ट, इंग्लैण्ड के बादशाह किंग जार्ज हमारे देखते-देखते संसार से कूच कर गये और भी अनेक सेठ-साहूकर चले जा रहे हैं। आखिर वे अपने साथ क्या ले गये? कहने का भाव यह है कि संसार की माया में फँसकर कुछ भी हाथ नहीं लगेगा और अन्त में पछताना ही पड़ेगा। इस मनुष्य-तन की कदर करो तथा जिस प्रभु भक्ति को करने के लिए यह शरीर मिला है, उसे पूरा करो।

उठ जाग क्या सुख सोया रे,
कायागढ़ के निवासी।

ऐ कायागढ़रूपी किले में निवास करने वाले जीव! उठ, जाग और मोह की निद्रा को त्यागकर देख! तेरी पूँजी को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी पाँच ठग दिन-रात लूट रहे हैं। इसलिए जागकर भगवान का भजन कर।

परमपिता परमात्मा जिसने गर्भ में रक्षा की और अब भी पालन कर रहा है, उसको तूने भूला दिया है। इसलिए तुम्हारा नाम नमक हरामियों की सूची में लिखा जायेगा। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

सुत दारा और लक्ष्मी,
पापी घर भी होय।
सन्त समागम हरिकथा,
'तुलसी' दुर्लभ दोय।।

तुम लोग यू॰पी॰ के रहने वाले हो, तुम्हें अच्छी प्रकार पता है कि पिछली बार कुम्भ मेले में कितने आदमी मर गये। कितनी स्त्रियां विधवा हो गयीं, कितने बच्चे अनाथ हो गये। किसी-किसी के घर में तो एक ही रह गया और बाकी सब-के-सब मर गये। सिन्ध और पंजाब में भी कितना नुकसान हुआ, यह भी आप अच्छी प्रकार जानते हो, परन्तु इतना कुछ होने पर भी आँखें नहीं खुलतीं। यही तो माया है, जो अब भी दिन-रात जमा करने में लगे हुए हो। क्या सोना जमा करके अपने साथ ले जाओगे? भजन की कमाई जो साथ जाने वाली है, वह कमाई तो हम कर ही नहीं रहे। कहा है-

हीरा जन्म अनमोल था,
कौड़ी बदले जाय।

हीरा जन्म कौड़ियों को जमा करने में गंवा दिया। क्या इन्हीं बातों से अपने को मनुष्य समझते हो? देखो, तारे नौ लाख बताये जाते हैं। कौन जाने कितने तारे हैं, परन्तु देखने में तो असंख्य लगते हैं। कई तारों को तो सूरज से भी बड़ा बताया जाता है। चन्द्रमा भी रात्रि को प्रकाश करता है। अनेक जड़ी-बूटियाँ भी रात्रि को चमकती हैं। बिजली, गैस, लालटेन और दीपक आदि भी रात्रि को प्रकाश करते हैं और इस पर भी यदि संसार के समस्त पहाड़ों में आग लगा दी जाये, तो भी रात्रि का अंधकार दूर नहीं होगा। संत कहते हैं-

राकापति षोड़ष उगहिं,
तारागन समुदाइ।
सकल गिरिन्ह दव लाइअ,
बिनु रबि राति न जाइ।।

जैसे रात्रि का अँधेरा सूरज के निकलने से ही दूर होता है, ऐसे ही

सच्चाई को जानने से ही माया, मोह और अज्ञानरूपी अंधकार दूर होगा। यह बात जरूर है कि सच्चाई देर में प्रकट होती है और झूठ जल्दी से फैल जाता है। आम के पेड़ को लगाने के लिए मेहनत की जरूरत पड़ती है, तभी उससे फल प्राप्त करने की आशा रहती है। अरण्ड के पेड़ तो जल्दी ही स्वयं फलते और फूलते हैं, परन्तु नष्ट भी जल्दी ही हो जाते हैं।

जितने भी हमारे देश में संत-महापुरुष हुए हैं, उस समय के लोगों ने उन सबका ही विरोध किया है। संत तुलसीदास जी का काशी के पंडितों ने यहाँ तक विरोध किया कि उन्हें मारने तक के उपाय किये। सन्त ज्ञानेश्वर की बातों को पहले-पहल लोगों ने नहीं माना और उनका विरोध किया। गुरु नानकदेव जी का भी काफी विरोध किया गया। मन्सूर को शूली पर चढ़ा दिया, शम्सतबरेज की खाल ही खींच ली। संत कबीरदास जी को भी लोगों ने नाना प्रकार के कष्ट दिये। जब वे सत्संग करते थे, तो लोग उन पर पत्थर फेंकते थे और मारपीट करते थे कि तुम सत्संग मत करो। वे भी उस समय हाथ जोड़कर कहते थे- अच्छा बाबा! अब प्रचार नहीं करेंगे, परन्तु सच्ची बात कहे बिना कैसे रह सकते थे। जैसे-जैसे लोग उनका विरोध करते गये, उनका प्रचार बढ़ता ही गया। एक बार मौलवी, मुल्ला, पंडित तथा पुजारी उनके पास गये और उनसे पूछा- तू मुसलमान होकर हिन्दुओं का गुरु बनता है, पर यह बता कि तू हिन्दू है या मुसलमान? कबीर साहब कहने लगे-

हिन्दू कहूँ तो हूँ नहीं,
मुसलमान भी नाहिं।
पाँच तत्व का पुतला,
गैबी खेले माहिं।।

न तो मैं हिन्दू हूँ और न ही मुसलमान। पाँच तत्वों का यह शरीर बना हुआ है, जिसके अन्दर परमात्मा की ज्योति और परमात्मा का नाम छिपा हुआ है। कहा है-

जैसी लकड़ी ढाक की,
वैसा यह मन देख।
बामें केसू छिप रहा,
यामें पुरुष अलेख।।

जैसे ढाक की लकड़ी में केसू का फूल छिपा रहता है और अपने समय पर प्रकट हो जाता है, वैसे ही इस शरीर में अलखपुरुष अविनाशी छिपा हुआ है।

जैसे ढाक की लकड़ी में केसू का फूल छिपा रहता है और अपने समय पर प्रकट हो जाता है, वैसे ही इस शरीर में अलखपुरुष अविनाशी छिपा हुआ है। उसी को जानने के लिए कहता हूँ।

उसी को जानने के लिए कहता हूँ। आप ही बताओ, इसमें हिन्दू की या मुसलमान की क्या बात है? जब पंडित और मौलवी हर प्रकार से लाचार हो गये, तो उन्होंने राजा धर्मदास से जाकर शिकायत करते हुए कहा- महाराज! काशी में कबीर जुलाहा हिन्दू और मुसलमान दोनों का दीन (धर्म) भ्रष्ट कर रहा है। वह अपना जूठन सबको खिलाता है और अपने चरण धोकर सबको पिलाता है। उसे आप सजा देकर ऐसे अधर्म के कार्य से रोकें।

राजा धर्मदास ने सिपाहियों के द्वारा कबीर साहब को बुलवाकर पूछा- कबीरदास! क्या तुम गुरु बनकर हिन्दुओं और मुसलमानों का दीन खराब कर रहे हो? जो कुछ ये लोग कह रहे हैं, क्या ये सब सच है? कबीर साहब कहने लगे- राजन! मैं तो किसी का गुरु नहीं बनता, ये लोग ही मुझे गुरु मान बैठे हैं। मैं तो भगवान के सच्चे नाम को स्मरण करने के लिए कहता हूँ जोकि सोलह स्वर और छत्तीस व्यजनों से परे है और सच्चे प्रकाश का ध्यान करना बताता हूँ, जो कि सबके अन्दर है- जहाँ सूरज, चन्द्रमा और अग्नि की रोशनी नहीं पहुँचती।

धर्मदास जी कहने लगे कि यदि ऐसी बात है और तुम बता सकते हो, तो मुझे भी अन्दर का प्रकाश और नाम बताओ। कबीरदास जी कहने लगे कि मेरा तो काम ही यही है कि भूले-भटकों को सीधा मार्ग बताऊँ।

कबीरदास जी धर्मदास को अन्दर अलग कोठरी में ले गये और उन्हें सच्चा नाम और सच्चा प्रकाश घट के अन्दर बता दिया? जब बाहर आये तो धर्मदास ने कबीर साहब को सिंहासन पर बैठा दिया और आप चरणों में गिरकर कहने लगा- हुजूर! आपने कृपा करके मेरे मनुष्य शरीर को सार्थक कर दिया। धर्मदास को कबीरदास के चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करते देख मौलवी, पंडित और पुजारी सब ही हैरान होकर सोचने लगे, हमारी दौड़ तो राजा तक थी। जब राजा ही इनका शिष्य हो गया, तो अब किससे शिकायत की जाये। इसलिये कहने लगे, "धन्य कबीर!" ऐसे महात्मा हमने आज तक ना देखे और ना सुने! कबीरदास का विरोध करने से ही आज सारे भारत में उनकी वाणियों को बड़े प्रेम से गाया जाता है।

कहने का भाव यह है कि जब तक मनुष्य को सच्चाई का ज्ञान नहीं होता, तब तक वह झूठ को नहीं छोड़ सकता। आज भी जो लोग झूठ को सत्य समझकर लगे हुए हैं, यह उनका दोष नहीं है; क्योंकि वे तो झूठ में ही अपना कल्याण समझ बैठे हैं।

सुनो-सुनो बचन नर नारी, हरि भजन करो सुखकारी

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भजन में कहा है-

जर्रे-जर्रे में है झांकी भगवान की।
किसी सूझ वाली आंख ने पहचान की।

हमारे अंदर भगवान ज्योति के रूप में विराजमान है, वह सब जगह समाया है, पर कोई सूझ वाली आंख ही उसको तत्व से जानती है। गुरु नानक देव जी कहते हैं-

मन मन्दिर तन भेष कलन्दर,
घट ही तीरथ नावां।
एक शबद मेरे प्राण बसत है,
बहुरि जनम नहिं आवां।

यह जो शरीर रूपी मन्दिर है, इसमें ही उस प्रभु का वास है, इसी के अंदर उसको ढूंढ़ो। संत ब्रह्मानन्द जी कहते हैं-

घट में ही उजियारा साधो,
घट में ही उजियारा रे।

हमारे घट के अन्दर ही प्रभु का उजियारा है, अज्ञानतावश हम उसे बाहर ढूंढ़ रहे हैं। रामकृष्ण परमहंस कहते हैं कि जब एक बच्चा मंदिर में जाता है, तो मुझे खुशी होती है, पर जब एक वृद्ध मंदिर जाए, तब मुझे दुःख होता है कि उसने अब तक अपने अन्दर उस प्रभु के प्रकाश को नहीं जाना और बाहर के प्रकाश को ही जलाने में लगा है। एक बालक है, वह तो अबोध है, उसे ज्ञान नहीं, वह अपने पिता से ज्ञान के बारे में पूछता है, लेकिन जो बूढ़ा हो गया और अभी तक प्रभु का सच्चा नाम नहीं जाना, तो यह तो बहुत दुःख की बात है। संत ब्रह्मानंद जी ने बताया-

सुनो-सुनो बचन नर-नारी,
हरि भजन करो सुखकारी।
जिन रचा शरीर तुम्हारा,
उसका क्यों नाम बिसारा।।

प्रभु के उस ज्ञान को जानो, जिसके लिये यह देव-दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन्हि गावा।

साधन धाम मोक्ष करि द्वारा।
पाइ न जेहि परलोक संवारा।।

यह जो मनुष्य शरीर मिला है, इसमें हमें भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन करना चाहिए। यदि इस सुन्दर शरीर को हम भोगों में ही गंवा देंगे, तो बाद में बहुत पछताना पड़ेगा। आगे कहा-

खाना पीना सो जाना,
सब काम है पशु समाना।
क्यों देह मनुज की धारी।
हरि भजन करो सुखकारी।।

खाना, पीना, सो जाना, ये कर्म तो पशु भी करता है, ये कर्म तो कुत्ता और बिल्ली भी करते हैं, परन्तु जो प्रभु का ज्ञान है, उसे केवल मनुष्य ही प्राप्त कर सकता है, मनुष्य ही प्रभु का भजन कर सकता है। हम मनुष्य शरीर में खाना पकाकर खा सकते हैं, परन्तु पशु खा सकता है, पका नहीं सकता। इसीलिये यह मनुष्य शरीर जो बड़े भाग्य से मिला है, इसे हमें भोगों में नहीं गंवाना चाहिए।

अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण से कहता है कि प्रभु! मैं असभंव कार्य भी संभव कर सकता हूँ, पर इस चंचल मन को वश में नहीं कर सकता। तब भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं- हे अर्जुन! चंचल मन अभ्यास और वैराग्य से ही वश में होता है, इसलिए भगवान के ज्ञान को जानो। उन्होंने कहा कि तू मुझे इन बाह्य नेत्रों से नहीं देख सकता। इसके लिऐ मैं तुझे दिव्य चक्षु देता हूं। तभी तू मेरी वास्तविकता को जान सकता है। जब भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैं, तब वह कहता है प्रभु! आप तो मेरे सखा-मित्र न होकर गुरुओं के भी गुरु हो। ज्ञान से ही मैं आपको जान सका। पहले तो वह भगवान को अपना मित्र और सखा ही समझता था, परन्तु जब उसको आत्मज्ञान हुआ, तब कहा कि ये तो गुरुओं के भी गुरु हैं। इसी प्रकार हमारी भी जो अन्तर्दृष्टि है, इसे ज्ञानी सद्गुरु महाराज से खुलवानी होगी। बिना ज्ञान के व्यक्ति अंधे व्यक्ति के समान है। जब तक हमारा अज्ञानरूपी मोतियाबिन्द नहीं हटेगा, तब तक हम प्रभु को नहीं देख सकते। जब मोतियाबिन्द हो जाता है, तो डॉक्टर उसका ऑपरेशन करता है, तो फिर व्यक्ति को दिखाई देने लगता है। इसी प्रकार गुरु महाराज जी अज्ञान रूपी मोतियाबिन्द का ज्ञान देकर ऑपरेशन कर देते हैं, तभी हम अपने हृदय में प्रभु के स्वरूप को देख पाते हैं।

एता चांदन होंदियां, गुरु बिन घोर अंधार

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! आप लोगों ने श्री हंस जयन्ती बड़े अच्छे ढंग से मनायी। आपलोग जो भी गाँवों से, कस्बों से या शहरों से आये हुए हैं, जिन सज्जनों को इच्छा हो, अपने-अपने इलाकों में प्रोग्राम करने की, वे कार्यालय में पत्र भेजें। तब वहाँ से आ करके हम तुम लोगों को सत्संग सुनायेंगे। घर बैठे तुम्हें आत्म-चर्चा सुनने को मिलेगी। कहा है-

नाम लिया हरि का जिसने,
तिन और का नाम लिया न लिया।।
पशु पक्षी सभी जग जीवन को,
जिसने अपने सम जान सदा।
सबका परिपालन नित्य किया,
तिन बिप्रन दान दिया न दिया।।
जिसके घर में प्रभु की चर्चा,
नित होवत है दिन रात सदा।
सत्संग कथामृत पान किया,
तिन तीरथ नीर पिया न पिया।।
जिन काम किये परमारथ के,
तन से मन से धन से करके।
जग अंदर कीरत छाय रही,
दिन चार बिशेष जिया न जिया।।
गुरु के उपदेश समागम से,
जिसने अपने घट भीतर में।
ब्रह्मानन्द स्वरूप को जान लिया,
तिन साधन योग किया न किया।।

धर्म को हर एक नहीं समझता, अगर हर एक समझ जाता, तो नर्क-स्वर्ग की बात कहाँ रहती? पर हरएक नहीं जानता है। जगह-जगह तुमलोग प्रचार करो और हम भी आयेंगे। देखो, यह तो तुमलोग हमारे लिए सजावट कर देते हो, नहीं तो हमें शौक नहीं है ऐसा करने में। हम तो नीचे भी एक समान और ऊँचे भी एक समान- हमें कभी नहीं गर्व होता। हमें कभी कोई बड़ा अच्छा खाना भी खिलाते हैं, पर हमें उसमें भी उतना ही आनन्द है और रूखी रोटी में भी उतना ही आनन्द है। सचमुच में वह तो भक्त अपनी भावना अपनी मेहनत और अपनी सेवा का महत्व दिखाते हैं और उनकी इच्छा होती है। इसलिए हमें वैसा करना पड़ता है। देखो, कभी पत्थर का भगवान वस्त्र नहीं पहनता, पर भक्त लोग सजाते हैं और अपने मन को रिझाते हैं कि हम अपने भगवान को पहना रहे हैं; वैसे ही हमारे लिए भी भक्त लोग पहनने के लिए एक-से-एक चीज लाते हैं। हमें कोई भी इच्छा नहीं होती। पर फिर भी उनकी इच्छा के मुताबिक वैसा करना पड़ता है। इस समय हजारों जनता वहाँ हमारे घर में आई है, वहाँ श्री हंस जयन्ती मना रहे हैं और फिर भी मैं अपना घर छोड़कर के तुम्हारे यहाँ आयी हूँ। हजारों जनता कल भी वहाँ थी, कल वहाँ बारह बजे तक प्रोग्राम चला। साढ़े ग्यारह बजे मैं प्रवचन करके आई हूँ और सब लोगों को वहाँ रोते छोड़कर आई हूँ। उनका प्रेम है, प्रेम रुलाता है, नहीं तो, वैसे कोई थोड़े कोई ही रोता है। प्रेम से रोना आ जाता है। आप लोग खूब भजन-सुमिरण करें। सुमिरण ही सार है।

आप लोगों ने मुझे यहाँ बुलाया, यह बहुत अच्छी बात है। यह सत्संग मिल रहा है। वैसे तो यहाँ आने की मेरी उम्मीद नहीं थी। मैं सच कहती हूँ कि वहाँ घर में ही इतने लोग आये थे, फिर भी आप लोगों का प्रेम और भक्त लोगों की जो भावना होती है, उससे बँधकर आना पड़ता है। यह ऐसी बात है कि भक्तों के मर्म को समझना बहुत मुश्किल है। वे तो स्वयं हृदय को खीचते हैं। हृदय के अन्दर उथल-पुथल होती है। जैसे किसी का बेटा मर जाता है और बाप को पता लग जाता है, उसकी आत्मा अशान्त होने लग जाती है कि कुछ-न-कुछ घटना होने वाली है।

भजन करना चाहिए, नहीं तो यह मनुष्य देह किस काम की? सुबह में खाया और शाम को क्या बनाया? इसी तरह शाम को खाया मोटी-मोटी मलाई दूध के साथ में और सुबह को क्या बनाया, वही गंदगी। यही तो मनुष्य आज कर रहा है और नहीं तो बताओ,

वह और क्या कर रहा है? इससे अगर अच्छा काम कर रहा है, तो बताओ क्या कर रहा है? देखो, मनुष्य की हर चीज गंदी है। आँख से देखो कितनी गंदगी निकलती है, कान देखो, नाक देखो, हर चीज उसकी जो है, उसमें से कितनी गंदगी निकलती है। फिर जब वह मरता है, तो क्या कहते हैं कि कहीं भूत बन के न आ जाये। या तो कब्र में नीचे गाढ़ देंगे या जला देंगे। देखो, महान उसको कहते हैं जो वास्तव में अपने लक्ष्य पर ऊँचे उठ जाते हैं। ऊँचा उठने का साधन तत्वदर्शी महापुरुष बताते हैं। इसलिए तत्वदर्शी के पास जाओ और नम्र भाव से पूछो। जब तुम्हारी कीमती चीज गिर जाती है, तो क्यों झुककर उस चीज को उठाते हो? कहते हैं-

झुकते वही हैं जिनमें जान होती है।
अकड़े रहना मुरदे की पहचान होती है।

जो महापुरुषों के सामने झुकते नहीं और माँगते नहीं हैं, वे इस संसार से भी खाली चले जाते हैं। कहा है- तेरे हृदय के अन्दर ही वह चेतन देव है। वह ज्योति तुम्हारे अन्दर ही है और तत्वदर्शी उसे जनाते हैं। कहा है-

ज्यों तिल माहीं तेल है,
ज्यों चकमक में आग।
तेरा साईं तुझमें,
जाग सके तो जग।।

इस जीवन को भी रखना चाहिये। अगर यह जीवन नहीं रहेगा, तो संसार की सुन्दरता को कैसे देखोगे और फिर आगे के लिये भी इसमें कुछ कमाई करके जाओ।

कबीर साहब कहते हैं-

राम बुलावा भेजिया,
दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग में,
सो बैकुण्ठ न होय।

राम कहते हैं कि तुम आ जाओ, तुम्हारा टाइम हो गया है और वह कहते हैं कि मुझे तो जो आनन्द इस साधु-संग में होता है, वह किसी भी चीज में नहीं। एक दूसरी संस्था का आदमी हमारे यहाँ आया। पन्द्रह-बीस दिन हमारे साथ रहा, तब उसने ज्ञान की जिज्ञासा प्रकट की। उसको ज्ञान मिला। उसके बाद फिर पन्द्रह-बीस दिन और हमारे साथ रहा। मैंने कहा- बताओ, सच कहना कि यह ज्ञान धर्म अनुकूल है कि नहीं, अविनाशी है कि नहीं, यह ज्ञान सनातन है कि नहीं, यह सबके लिए एक जैसा है कि नहीं? उसने कहा- यह सबके लिये एक जैसा है सनातन है और अविनाशी है। पर, इस मर्म को कोई नहीं समझता है। मैंने कहा-अब तो समझ गया, अब तू जा। तब देख लीजिये, वह अपने घर गया और हंस जयन्ती में फिर दिल्ली आया। इस बीच अपने परिवार के दस व्यक्तियों को, पिता, बहन, भाई, बहनोई सबको उसने उपदेश दिला दिया। हैदराबाद में हमारा महात्मा था, उसे वहाँ से ले जाकर उसने सबको उपदेश दिलाया और अब वह यहाँ आया तो मेरे लिए बढ़िया साड़ी ले आया। मैंने कहा-मैं तो पहनती नहीं, तो कहा- माँ! मेरी भावना है, तुमको साड़ी पहनाने की। मैंने कहा- अच्छा है साड़ी लाया, बड़ी अच्छी बात है। तो देख लीजिए, स्वंय उसके हृदय ने गवाही दी कि यह माँ है और भक्तों का यह कर्त्तव्य होता है; जैसे बड़े-बड़े सेठ होते हैं, जब उनके पास धन ज्यादा हो जाता है, तो बड़े-बड़े मन्दिर बनवा देते हैं। लोग कहते हैं कि यह सेठ तो बड़ा धर्मात्मा है। बिल्कुल मोह-माया नहीं है, इतना विशाल मन्दिर बनवा दिया। पर अपने हृदय का मन्दिर जो है, उसमें अंधकार-ही-अंधकार पड़ा है। हृदय के मन्दिर को नहीं जगाया, बाहर के मन्दिर में ही दीप को जलाया। अन्दर का दीपक कभी जलाया नहीं। मैं अभी बम्बई गई। वहाँ भी एक जैनियों ने मन्दिर बनवाया है, एक सेठ ने उस मन्दिर को बनवाया है। कहते हैं कि चार करोड़ रुपये उसमें लग चुका है। इतना विशाल मन्दिर है, वह और उसमें सारे देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं। उसको सन्तान नहीं है, केवल एक लड़की है। तो बताइये, इतना विशाल मन्दिर बनवा दिया और हृदय का मन्दिर सूना-का सूना ही है। गुरुनानक देव जी कहते है-

जै सौ चन्दा ऊगवहिं,
सूरज चड़इं हजार।
एता चान्दन होंदियाँ,
गुरु बिन घोर अन्धार।।

बाहर का जितना भी चाँदना हो जावे, पर गुरु के बिना हृदय के अन्दर चाँदना नहीं हो सकता है। आप लोग इस आत्मज्ञान के प्रचार को बेधड़क होकर करें और जगह-जगह पत्रिका और पुस्तकें घर-घर में मंगावें। घर में भी मँगाकर पढ़ सकते हो।

> हम तो नीचे भी एक समान और ऊँचे भी एक समान- हमें कभी नहीं गर्व होता। हमें कभी कोई बड़ा अच्छा खाना भी खिलाते हैं, पर हमें उसमें भी उतना ही आनन्द है और रूखी रोटी में भी उतना ही आनन्द है। सचमुच में वह तो भक्त अपनी भावना अपनी मेहनत और अपनी सेवा का महत्व दिखाते हैं और उनकी इच्छा होती है। इसलिए हमें वैसा करना पड़ता है।

कह नानक नाम संभाल, सो दिन नेड़े आयो

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! आज हम सब हरिद्वार की पावन नगरी में अपने पूज्य श्री हंस जी महाराज जी की जयंती मना रहे हैं; और वर्षों से हम लोगों ने इस स्थान को चुना, पहले श्री हंस जयंती दिल्ली में होती थी और बहुत से कार्यक्रम दिल्ली में अभी भी होते हैं; लेकिन जब श्री महाराज जी के बारे में पढ़ेंगे, सुनेंगे और समझेंगे, तब पता चलेगा कि उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा हरिद्वार से शुरू की थी, क्योंकि हरिद्वार को हरि का द्वार कहा जाता है। आज देश-विदेश के लोग भी हरिद्वार से ही अपनी धर्मयात्रा को शुरू करते हैं। चाहे केदारनाथ जाएं, चाहे बद्रीनाथ जाएं, चाहे अन्य धाम जाएं, उसका पहला द्वार जो है, वह हरिद्वार है। हरि का द्वारा है- हरिद्वार। आज मैं देख रही हूं कि यहां पर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, नेपाल और भिन्न-भिन्न स्थानों से भक्त समाज आया हुआ है। कोई छत्तीसगढ़ का है। कोई कहां से, कोई कहां से आया है। बस भक्तों को एक सूचना मिलती है कि श्री महाराज जी की जयंती मनायी जा रही है और सब भक्त लोग अपने-अपने क्षेत्र से चले आते हैं। कोई परिवार से मातृ जयंती में आता है, कोई श्री हंस जयंती में आता है, कोई श्री भोले जी महाराज के जन्मदिन में आता है, तो सारा परिवार एक साथ नहीं आ सकता है; लेकिन आज मैं देख रही थी कि विशाल जनसमूह श्री गुरु महाराज की जयंती मनाने के लिए आया हुआ है। मुझे लगता है कि अगली बार और बड़ा पंडाल बनाना पड़ेगा, जिससे कि और भी हमारे भक्त दूर-दूर से आकर के दर्शन कर सकें और सत्संग सुन सकें। कल मैं किसी हरिद्वार के व्यक्ति से बात कर रही थी, तो उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम की वजह से हरिद्वार का व्यवसाय बढ़ गया है। वह कहने लगे कि मां जी, आप सारे प्रोग्राम हरिद्वार में ही करिए; क्योंकि यहां के पूरे होटल, आश्रम और धर्मशालाएं, सब कुछ बुक हो जाता है और हमारे हरिद्वार को आय का एक बहुत सुनहरा अवसर मिल जाता है; तो देखो समाज में आज आवश्यकता है अध्यात्म के ज्ञान की, क्योंकि अध्यात्म हमें बहुत ऊंचा ले जाता है। यह रोजमर्रा की बीमारी दुःख-सुख, ये तो अस्थायी है, लेकिन अध्यात्म का जो सुख है, वह तो हमेशा हमारे साथ रहता है; अगर इस हरिद्वार में आकर भी आपको ज्ञान जानने की जिज्ञासा और संसार से वैराग्य नहीं होगा, तो कहीं नहीं हो सकता। यहां कोई उठाया जा रहा है, कोई ले जाया जा रहा है, कोई जलाया जा रहा है, कोई गंगा में फेंका जा रहा है, कोई कुछ कर रहा है; पर गंगा मां सबको अपनी गोद में समेट रही है, कितने अदभुत चमत्कार हैं यहाँ पर, तो यह भी किसी संत की प्रार्थना थी, भक्त की पूजा थी, भक्त की आराधना थी, जो गंगा मां का धरती पर आना हुआ। आज उस गंगा मां की गोद में असंख्य लोग समा गये, कितने जाने को तैयार हैं; स्थाई यहां कुछ भी नहीं है। एक आर्किटेक्ट कहता है कि यह बिल्डिंग 100 साल तक रहेगी, कोई इंजीनियर कहता है कि इस बिल्डिंग को भूकंप भी आ जाएगा, तो भी कुछ नहीं होने वाला। लेकिन उस बिल्डिंग में जिस व्यक्ति ने रहना है, वह तो स्थाई नहीं है-

आये हैं सो जायेंगे,
राजा रंक फ़कीर।
एक सिंहासन चढ़ चला,
एक बंधा जाए जंजीर।।

अब सोचना यह है कि कौन सिंहासन चढ़ के जाएगा और कौन जंजीरों में बंध के जाएगा! दूसरी तरफ हम सोचते हैं कि जब यह शरीर ही नहीं रहेगा, तो कैसे हम सिंहासन पर जाएंगे या कैसे जंजीरों में बंधेंगे?

सिंहासन पर कौन चढ़ता है, जो सचमुच में उस अध्यात्म ज्ञान को जानता

है, वह अध्यात्म ज्ञान, गुप्त ज्ञान, आप ही के अंदर है; क्योंकि जब डॉक्टर दवाई देता है, तो पहले आपकी नब्ज देखता है, आपके शरीर का बुखार चैक करता है, उसके हिसाब से फिर दवाई देता है, तो संतों की जो वाणी होती है, वह बहुत अटपटी होती है।

संतों की वाणी अटपटी,
झटपट लखे न कोय।
जो झटपट लखे,
तो चटपट दर्शन होय।।

संतों ने यही कहा कि आया है सो जाएगा। सुबह आप बैठ जाइए, गंगा के किनारे पर, तो देखेंगे कि कोई पूजा कर रहा है, कोई ध्यान कर रहा है, कोई चला जा रहा है, कोई सोच रहा है कि मैं एक डुबकी लगा लूं, तो मेरे सारे पाप नष्ट हो जाएंगे। गंगा मां तो हमारे लिए एक वरदान है, जिसे राजा भगीरथ धरती पर लेकर आए। गंगा को लाने के बाद उनके मन में यही विचार था कि इससे मेरे पूर्वजों का तो उद्धार होगा ही, साथ ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी मनुष्य जाति का कल्याण होता रहेगा। उसी की वजह से मनुष्य के अंदर एक सोच आ गई कि गंगा हमारे पाप धो देगी, तो कितनों का पाप धोए? अरे, भगवान ने हमें हृदय दिया, मन दिया, आत्मा दिया, शरीर दिया, हृदय में परमात्मा का वास दिया; अगर हम उसको नहीं ढूंढेंगे, तो हमारी मुक्ति कैसे होगी? गुरु नानक देव जी ने बड़ी स्पष्ट वाणी में कहा कि-

लख चौरासी भ्रमदिया,
मानुष जन्म पायो।
कह नानक नाम संभाल,
सो दिन नेड़े आयो।।

चौरासी लाख योनियों भरमते-भरमते मनुष्य जीवन मिला है, लख चौरासी भरमते-भरमते यह मनुष्य चोला मिला है। हम मनुष्य चोले की वासनाओं को अपने बस में नहीं करते, बल्कि हम उनके बस में हो जाते हैं। अपने मन-इन्द्रियों को खुला छोड़ देते हैं, जबकि अध्यात्म की साधना कर इन पर काबू पाना चाहिए और मन को परमात्मा के भजन-ध्यान में लगाना चाहिए। जब आप चौरासी लाख योनियों को देखते हैं, आप गंगा जी में मछली भी देखते हैं, थोड़ी दूर चलेंगे, तो उनके बच्चे भी दीखते हैं, सब चीजें इसी भूमि में दिख जाती हैं, लेकिन जीव को जब मनुष्य योनि मिलती है, तो हम कहते हैं नमन है, नमस्कार है।

अरे, भगवान ने हमें हृदय दिया, मन दिया, आत्मा दिया, शरीर दिया, हृदय में परमात्मा का वास दिया; अगर हम उसको नहीं ढूंढेंगे, तो हमारी मुक्ति कैसे होगी?

वह नमन हम उस आत्मा को कर रहे हैं, जो इस मानुष चोले के अंदर विराजमान है और वह आत्मा ही हमें परमात्मा से मिलन कराती है। जब यह शरीर समाप्त हो जाएगा, तो रिश्तेदार भी श्मशान घाट छोड़कर आ जाएंगे। वह व्यक्ति तो चला गया, स्वर्ग सिधार गया, पर पीछे जो छूट जाते हैं, उनके लिए वह स्वर्गीय हो जाता है, उनको कहते हैं स्वर्गीय। पर, क्या हमने कभी सोचा कि स्वर्ग के लिए हमें करना क्या है, स्वर्ग तो ऐसा पावन स्थान है, जहां हम इस गंदे चोला को और गंदे कर्मों को लेकर पहुंच नहीं सकते हैं। तभी संतों ने कहा कि-

संतों की वाणी अटपटी,
झटपट लखे न कोय।
जो झटपट लखे,
तो चटपट दर्शन होय।।

जब भिलनी भगवान राम को बेरों का भोग लगा रही थी, तो उसके अंदर कितना प्रेम रहा होगा! हम तो सोचते हैं कि भगवान के लिए शुद्ध बनें, शुद्ध सामान जाए, शुद्ध भोजन का भोग लगे, शुद्धता का ध्यान रखते हुए भगवान को भोग लगाते हैं। पर, भिलनी ने भगवान को समझा, भिलनी का तो ऐसा अलौकिक प्रेम था, उस प्रेम में भिलनी जो थी, इतनी मस्त हो गई थी कि वह यह नहीं सोचती है कि मैं भगवान को जूठे बेर कैसे खिलाऊँ, पर वह सोचती है कि मैं भगवान को खट्टे बेर कैसे खिलाऊँ। एक-एक बेर को चखकर के वह भगवान राम को भोग लगाती है। तो जब तक हम-तू और मैं की भाषा में रहेंगे, हम कभी भगवान के साथ एक नहीं हो सकते; क्योंकि कहा है-

संत मिलन को चालिए,
तजि माया अभिमान।
ज्यों-ज्यों पग आगे धरे,
कोटिन यज्ञ समान।।

आप सब हरिद्वार आए हैं, बहुत भक्त लोग प्रार्थना करते हैं कि मां जी, हरिद्वार में सारे कार्यक्रम कर लें, श्री भोले जी का जन्म-दिवस आता है सावन मास में, हमारी श्री माता जी की जयंती आती है अप्रैल में, इसके अलावा और भी छोटे-मोटे कार्यक्रम होते हैं, इन सबको हरिद्वार में करिए। इतना महत्व है हरिद्वार का, यहाँ स्वर्ग जैसा एहसास होता है। वैसे तो स्वर्ग-नरक अपने कर्मों से मिलता है, पर हमें एहसास होता है, जब हम देखते हैं कि यही ज्ञान का स्थान है, अंतिम स्थान यही है। तो चौरासी लाख योनियां भरमते-भरमते मनुष्य जन्म मिला, पर इसके बारे में कभी सोचा! क्यों मिला है मानुष चोला। संतों ने कहा है- कि मानस चोला अनमोल है, इसे माटी में ना मिला, पता नहीं फिर मिलेगा कि नहीं। इसलिए इसे प्रभु भजन-भक्ति में लगाकर सार्थक बनायें।

SPIRITUAL DISCOURSES-SCARCE IN THIS WORLD

MATA SHRI MANGLA JI

Dear Premies, You all are listening to the spiritual discourses so peacefully, that it seems as if Kalikal (the Age of Darkness) has no impact. While this Dark Age is identified to have abundant powers, our Saints tell us that its force is nullified on those who constantly remember the Holy Name. It must surely be the great karmas from our previous lives that we are bestowed with human forms. Different pleasures of life can be experienced by other life forms but God's Holy Name can be realized only in human birth.

God made man and gave him the ability to think, to understand and gave him hands and legs to perform dutiful Karma. So what is the right thing for any man to do?

Ram is in you and in me,
He is indeed in everyone.
Love each one equally,
As no one is a stranger.

When the spirit of God resides in each person, then why differentiate among them? Those who do not understand this fact, create artificial barriers to divide people. A seer breaks these barriers down to unleash the internal divine unity. But only those who offer their mind and thoughts to Guru Maharaj Ji get these benefits. In Ramcharit Manas it is said:

Man should perform various Karmas through his body,
But rest all his thoughts on The Almighty

Our spiritual earnings are the true rewards that will go with us to the next life. Worldly possessions are all left behind. When the soul leaves this body, even the family tries to conduct the final rites in a timely manner. When the person is alive, he gets great love from his family but the same family eagerly sends the dead one to the cremation grounds.

What is that energy, divinity that runs the body? Saints and spiritual teachers talk about this soul only. What you desire to obtain from these great teachers is a question that deserves deep thought. Some ask for increased profit in their business, others ask for children, yet others ask for health and well being of their loved ones. But the ideal thing to ask for is devotion! Saints have said:

Children, wife and wealth are found in all households,
But privileged ones get company of Saints and enjoy spiritual discussions.

You are truly fortunate to participate in this spiritual gathering. To get Darshan and to hear spiritual discourses is a matter of great luck. You must have seen Ramayan on television. Kaakbhusundi Ji was enjoying the childhood plays of Lord Ram. Ram was pulling a piece of bread, and Kakbhusundi Ji was pulling it from the other side. When he pulled it to the other side, Lord Ram started crying for the piece of bread. This small event caused confusion to Kakbhusundi and he thought how could the King of three worlds be crying for a piece of mere bread?

The crow then flew to Lord

Shankar who gave him spiritual guidance that when God comes to earth in human form (of Lord Ram), then he would behave as a human only. Then he understood.

Lord Ram also presented his true form to Kakbhusundi Ji and gave him a boon to ask for anything, be it happiness, long life or popularity. The crow replied that all of these things would end in due course of time. A rich person would one day spend all his wealth. Long life is of no use, as one has to die some day. Youth also doesn't stay forever. So he asked God to bless him with service and gift to enjoy the God's play (Leela) on earth. Lord Ram acknowledged the sharpness of his mind and blessed him with divine bliss and devotion.

There are many who sing poems and songs in God's praise but can't explain the true meaning of these words. But wise teachers explain the hidden meanings. A true devotee is not bothered by self-ego and offers his full services at the feet of his teacher.

During the spiritual discourse, Kabirdas Ji once said that there is a devotee who offered his entire wealth but in spite of that couldn't become a true disciple. King Dharamdas had offered his great wealth to the teacher. He left his kingdom and used to live across the teachers cabin in a hut to get a glimpse of his teacher day and night. On hearing the discourse, Dharamdas went to Kabirdas Ji and requested that he be told as to what prevented him from becoming a true devotee, a true disciple. Kabirdas Ji told him that there must be some form of weakness that he sees himself as different, as non-united with the teacher. Dharamdas understood the lesson.

We sow seeds in the farms. The seed looses its identity in the soil and then transforms into a seedling, and later becomes a tree. It then gives fruit and shade to others. Similarly, you should turn yourself into such seeds that loose its own identity to bring joy and happiness to others. With Guru Maharaj Ji's blessings we are fortunate to know Holy Name, which can evolve man to great heights.

When there is a thread in the needle then it is easily found. Similarly, without the thread of Holy Name, we will get lost in materialism and worldly charms. But the one who knows Holy Name always rests his thoughts on God's feet. Even if he gets lost for a little while, but listening to spiritual discourse will awaken his understanding and bring him back on the path. It is said that one should repeatedly listen to the discourses and teachings of Ram, Krishna, Kabir and other Saints. Without this, man will get lost in this world. Listening to spiritual discourses is like charging the battery of your soul. Discourses awaken the dormant qualities of man.

In these discourses you are prompted for service in Guru's Ashram. Saints awaken us to spread the divine flame by conducting more spiritual gatherings. Our preachers put great efforts starting from a young age. You may not be able to walk for a mile and they travel ten miles to organize spiritual sessions and to share their learning. They are truly blessed by Guru Maharaj Ji. It is said:

He who remembers God himself,

And in addition helps other meditate too.

Guru Nanak says that he will surely get liberation

Man gets lost in the proceedings of this world because of its splendor. Saints and teachers come to this world and act like that thread of the needle that prevents it from getting lost. Those who know how to swim will cross the river. Others will drown and loose their lives. Guru Maharaj Ji teaches us the techniques of crossing this ocean of life and death. It is said:

The language of Saints may seem confusing,

No one gets it easily.

And the one who understand it quickly,

Will soon see God in all His glory

एको हंसो भुवनास्यास्य मध्ये स एवाग्निः सलिले सन्निविष्टः

हंस वह गुह्य तत्व है जो सारे ही ब्रह्मांड में समाया हुआ है। समस्त वेद एवं शास्त्र हंस की स्तुति के लिए ही लिखे गए हैं। हंस ही रहस्यों का रहस्य है; जिसके हृदय में हंस तत्व का उद्घाटन हो जाता है, वही मुक्ति के आनंद को प्राप्त करता है। प्राणियों की देह में अच्युत रूप से सदैव स्थित हंस ही परम सत्य है और हंस ही शक्ति स्वरूप है।

एको हंसो भुवनास्यास्य मध्ये
स एवाग्निः सलिले सन्निविष्टः।
तमेव विदित्वाअतिमृत्युमेति
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

वह एक ही हंस जल में अग्नि की भांति इस पृथ्वी आदि भुवन के बीच विद्यमान है। उपासक उसको जानकर ही मृत्यु को पार कर जाता है। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

हंस उपनिषद में लिखा है- समस्त देहों में यह जीव हंस-हंस जपता हुआ व्याप्त रहता है, उसी प्रकार जैसे काठ में अग्नि रहती है और तिलों में तेल रहता है। इसको जान लेने वाला मृत्यु का उल्लंघन कर जाता है। हंस ही वह अव्यक्त गायत्री छंद है, देवता है, शिव और शक्ति का रूप है, महामंत्र है, जिसका सभी ने ध्यान किया, जो वरदान देने वालों को भी वर देने वाला है। जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश का आधार है। सभी ऋषि और मुनि हंस के ध्यान से ही महान पद को प्राप्त करते हैं।

हंस के ध्यान के द्वारा ही ब्रह्म का साक्षात्कार होता है। जब मन हंस में विलीन हो जाता है, संकल्प-विकल्प का मन में लय होकर पुण्य-पाप का नाश हो जाता है, तब हंस सदाशिवरूप, शक्तिरूप सर्वत्र अवस्थित स्वयं ज्योति, शुद्ध-बुद्ध, नित्य, निरंजन और शांत रूप से प्रकाशमान होता है। ऐसा वेद का वचन है। हंस ही ईश्वरों का ईश्वर है, परब्रह्म परमेश्वर है। जन्म देने वाले ब्रह्मा को भी जन्म देता है, पालन करने वाले विष्णु का भी जो पालन करता है, संहार करने वाले शिव का भी जो संहारक है, जो शिव के हृदय रूपी मानसरोवर में हंस है, उसका वर्णन कैसे हो सकता है। वेदों में भी उसके लिए नेति-नेति कहा गया है। आत्म-साक्षात्कार का लघुतम साधन हंसोपासना है। हंस प्राण तत्व का दूसरा नाम है। प्राण का साक्षात्कार ही हंस के रूप में होता है। संपूर्ण ब्रह्मांड का सृजन, पालन और संहरण जिस चेतना केंद्र से होता है, अग्नि के अलाव से जैसे हजारों विष्फुलिंग चिनगारियां चारों ओर बिखर जाती हैं, उसी प्रकार चेतना केंद्र हंस के छोटे-छोटे कणों से सूर्यलोक, चंद्रलोक एवं चतुर्दश भुवन अस्तित्व में आते हैं और पुनः उसी में विलीन हो जाते हैं। यह सृष्टि और प्रलय खंड रूप में निरंतर चालू रहती है। हंस ही अव्यय, नित्य, शाश्वत, सर्वशक्तिमान एवं सर्वज्ञ हैं, उन्हीं की उपासना से भवबंधन से मुक्ति मिलती है-

हंस एव परं वाक्यं हंस एव तु वैदिकम्।
हंस एव परोरुद्रो हंस एव परात्परम्।।

हंस ही सबसे बड़ा मंत्र है। वेद हंस देव की ही स्तुति से सार्थक होते हैं। हंस रुद्र रूप में प्रकट होते हैं, हंस परत्पर सबसे सूक्ष्म अविनाशी हैं।

हंस हंस वदेद् वाक्यं प्राणिमां देह मास्थितः।
स प्राणापानमो ग्रन्थि रजये त्यामि धीयते।।

हंस-हंस इस महामंत्र का सदा उच्चारण करता रहे। हंस प्राणिमात्र की हृदय गुहा में निवास करते हैं। प्राण वायु और अपान वायु की ग्रंथि बंधन स्थान की पहचान हो जाने पर स्वयं ही हंस का अजपा जाप होने लगता है। स्वाभाविक अजपा जाप की स्थिति हंस दर्शन की साक्षात्कार स्थिति है।

हंस हंसेति मंत्रोअयं सर्वै जीवैश्च जप्यते।
गुरु वाक्यात् सुषुम्णायां विपरीतो भवेज्जप।।

राघव भट्टकृत दक्षिणा मूर्ति संहिता के 7 पटल में हंस विद्या का विशद विवेचन किया गया है। साठ श्वासों का एक प्राण होता है, छः प्राणों की एक घड़ी, चौबीस घटिकाओं का रात-दिन होता है। इस प्रकार इक्कीस हजार छः सौ श्वास रात दिन में लिए जाते हैं। इस प्रकार प्राणी प्रतिदिन 21600 बार हंस-हंस इस मन्त्र का जप करता है, जप के आरंभ से ही जन्म होता है, जप की समाप्ति पर मृत्यु हो जाती है। इस क्रम से बिना जाप के ही स्वयमेव जप होता रहता है, प्राणी की श्वास-प्रश्वास क्रिया हंस-मंत्र के जप से अनुप्राणित है। श्वास-क्रिया के साथ हंस-मंत्र के अनुसंधान को ही अजपा जाप का नाम दिया गया है। इसी अनुसंधान से प्राणी भव-बंधनों को छिन्न-भिन्न करके परम पद को प्राप्त करता है।

हंस देव परम सात्विक हृदयों में अपना दिव्य प्रकाश प्रकट करते हैं। हंस ही अग्नि और यज्ञ सामग्री सभी रूपों में स्वयं ही स्थित रहते हैं। हंस सर्वव्यापक, सूक्ष्म से सूक्ष्म हैं, मन, वाणी आदि से उनका साक्षात्कार नहीं होता। हंस साक्षात्कार का एक मात्र साधन गुरु कृपा है, जिस भाग्यशाली प्राणी पर गुरु कृपा हो जाती है, उसे उपदेश देकर गुरु कृतकृत्य कर देते हैं। सेवक अपनी हृदय-गुहा में हंस की दिव्य ज्योति के

दर्शन करने लगते हैं। वेदान्तियों ने हंस दर्शन को अद्वैत रूप में देखा है, वे कहते हैं कि पाशुपत ब्राह्मोपनिषद् के वचन- "हंस प्राणवयोरभेद:" हंस और ओंकार एक देव के नाम हैं। "विपरीतो भवेज्जप:।" हंसो हंसो हंसो हंस जपते-जपते मंत्र विपरीत होकर सोहं-सोहं में परिवर्तित हो जाता है। यही "अहंब्रह्मास्मि" का सद्ज्ञान है। अद्वैत तत्व बोधक उपनिषदों में हंसदेव का विस्तार से विवेचन है। योगियों और तांत्रिकों ने कुण्डलिनी जागरण और क्रमश: षट्चक्रों में हंसदेव का ध्यान और ब्रह्मरंध्र में स्थित सहस्रदल कमल में श्री हंसदेव के साक्षात्कार की सोपान विधि सीढ़ी के सहारे ऊपर पहुँचकर लक्ष्य साक्षात्कार की विशद व्याख्या की है।

हंसाभ्यां परिवृत कमलैदिव्यैर्जगत् कारणं।
विश्वत्कीर्ण मनेक देह निलं स्वछन्दमानन्दकम।।

'हंस' प्राणिमात्र में व्यापक सबके आत्मस्वरूप, कमल के समान सुंदर मुख तथा दिव्य नेत्र वाले, जगत के कारण विश्व के प्राणियों का उद्धार करने के लिए अनेकों देह धारण करने वाले, स्वछंद, आनंददाता, अविनाशी, अखंड सच्चिदानंद, परिपूर्ण, अनंत कल्याणकर्ता, श्री गुरुदेव के श्री चरण कमलों का ध्यान कर। श्री गुरुदेव कैसे हैं, सो कहा है कि लोक-लोकांतरों में व्यापक, निर्मल, नित्य परा भक्ति से जानने में आने वाले, निष्कल कलाओं अर्थात माया से अति परे नित्यबुद्ध, बोध स्वरूप, सहस्रकमल दल में विराजमान रहने वाले, नित्यानंद स्वरूप, परात्पर, आत्मस्वरूप, प्रकाश स्वरूप, स्वछंद और सबके हृदय में विराजमान हैं। ऐसे श्री सद्गुरुदेव को मेरा बार-बार नमस्कार है।

स्वप्ने शरीरममि प्रहत्या सुप्तः सुप्तानभि चाक शीति।
शुक्रमादाय पुनरति स्यानम् हिरण्मय पुरुष एक हंसं
प्राणेन रक्षन्नवरं कुलायं बहिष्कुलायादमृत श्चरित्वा।
स ईयते मृतो यत्र कामं हिरण्य पुरुष एक हंस

वह परम प्रकाश स्वरूप, परम पुरुष, परमात्मा हंस, सोते हुए स्वप्न देखते हुए एवं जागते हुए भौतिक भाव को प्राप्त हुए सभी में जागता है। फिर जन्म के कारण उस तेज के द्वारा इस लोक और परलोक रूप स्थान को प्राप्त होता है। वह प्रकाशस्वरूप एक हंस ही प्राणों द्वारा एवं प्राणों के स्वामी अमृत द्वारा मानव देह रूप घोंसले को पालता हुआ रहता है और जब घोंसले से बाहर जाता है, तो वह स्वतंत्र विचरण करता हुआ अमृत रूप में पहुँचता है। वह जहां चाहे पहुँच जाता है। उसके लिए कोई प्रतिबंध नहीं रहता। वह सर्वत्र विद्यमान है।

हंसविद्यामृते लोके नास्ति नित्यत्पसाधनम्।
यो ददाति महाविद्यां हंसाख्यां पावनीं पराम्।।

हंस रूपी विद्यामृत के समान जगत में नित्तत्व का अन्य साधन नहीं है। जो इस हंस नाम की परमेश्वरी महाविद्या को देता है, उसकी सदैव ज्ञानपूर्वक सेवा करनी चाहिए और गुरु जो कुछ शुभ अथवा अशुभ आदेश दे, उसका पालन शिष्य को बिना विचारे संतोषयुक्त भाव से करना चाहिए। इस हंस-विद्या को गुरु से प्राप्त करके, आत्मा से आत्मा का साक्षात्कार कर और निश्चय ब्रह्म को जान, वर्णाश्रम जाति आदि के संबंध और वेद तथा शास्त्रों की बातों को नि:संकोच भाव से छोड़ दे और गुरु की सदा सुश्रूषा करे, इससे मनुष्य का सच्चा कल्याण होता है। **हंसः शक्रे रविष्ठानं चराचर मिदं जगत्।**

हंस शक्ति प्राण तत्व से सम्पूर्ण चराचर जगत उत्पन्न हुआ, उसी की शक्ति से स्थिर प्रवाह रूप से नित्य एवं सनातन है। हंस देव **"तत्सृष्ट्वा तदेवानु प्राविशत्"** जगत सृजन करके उसमें अवस्थित हो गया। प्रणव ओंकार को अन्तिम तत्व स्वीकार करने वाले दार्शनिकों को चेताया गया कि ओंकार से भी सूक्ष्म और परात्पर रहस्यमय देव हंस है और यही तत्व "सा काष्ठा सा परागति:" के रूप में वेदों में वर्णित है।

हंसेति प्रकृतिर्जेया ओंकारः प्रकृतेर्गुणः।
हकारेण वहिर्याति सकोरण विशेतः पुनः।
हंसेति परम मन्त्रं जीवो जपति नित्यशः।।

हंस प्रकृति-कारण है और ओंकार उसका गुण अर्थात कार्य है। इसी कारण प्रत्येक प्राणी जब श्वास बाहर को छोड़ता है, तो स्वभावत: प्राण वायु में हकार 'ह' वर्ण की ध्वनि होती है और जब श्वास अंदर को लेता है, तो उसमें सकार 'स' वर्ण की ध्वनि स्पष्टत: सुनाई पड़ती है। इस प्रकार प्राणिमात्र श्वास-प्रश्वास क्रिया के साथ हंस मन्त्र का जप करता रहता है। यह जप की स्वाभाविक प्रक्रिया है। जब मानव हंस मन्त्र का अनुसंधान करने का अभ्यास कर लेता है, तो कुछ समय पश्चात अनुभव होने लगता है कि प्राण और अपान की ग्रन्थि जहां मिलती है, वहां हंसदेव का प्रकाश प्रत्यक्ष होने लगता है। और उस भूमिका में पहुँच कर स्वयमेव हंस-मन्त्र का जाप होने लगता है। इसी जाप को अजपा-जाप कहा जाता है। उपनिषदकार महर्षियों का निश्चित मत है कि-

हंस विद्यामृते लोके नास्ति नित्यत्व साधनम्।

जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पाने का एकमात्र साधन हंस विद्या है। दूसरे किसी भी उपाय से निर्वाण पद प्राप्त होना संभव नहीं है। ■

प्रेरक प्रसंग

फकीरी का मतलब

हजरत मियां मीर लाहौर के विख्यात सूफी संत थे, वे मुगल राजकुमार दारा शिकोह के गुरु और गुरु अर्जुन देव के निकट मित्र माने जाते थे। अमृतसर स्थित हरमंदिर साहिब की आधारशिला भी उन्हीं के हाथों रखी गई थी। कहा जाता है कि एक बादशाह मियां मीर से मिलने आया। शाही ठाट-बाट और हीरे-जवाहरात से भरे ऊँटों के साथ जब वह कुटिया पर पहुँचा, तो बाहर बैठे फकीर ने उस सूफी संत को सूचना दी। संत मुस्कराए और संदेश भेजा, 'उसे लौट जाने दो, अभी उससे मिलने की तैयारी पूरी नहीं हुई है।' बादशाह आहत हुआ। वह राजधानी लौटकर वैभव त्याग साधारण जीवन जीने लगा। कुछ वर्षों बाद फिर कुटिया पर पहुँचा, पर संत ने फिर मिलने से इनकार कर दिया। बादशाह ने सोचा, 'अब कौन-सी कमी रह गई है?' उसने साधना आरंभ की, संतों का संग किया और धीरे-धीरे भीतर का अहंकार भी क्षीण होने लगा। लंबे समय के बाद जब वह तीसरी बार संत के द्वार आया, तब मियां मीर ने उसे बुला लिया। बादशाह चरणों में झुककर बोला, 'हजरत! पहले दो बार आपने क्यों लौटाया?' संत ने गंभीर स्वर में कहा, 'पहली बार तुम राजसी अहंकार में डूबे थे। दूसरी बार बाहरी वेशभूषा त्यागी थी, पर भीतर का घमंड जीवित था। तीसरी बार तुम सचमुच खाली होकर आए हो। यही फकीरी है- अहंकार का त्याग चाहिए, न कि केवल बाहरी आडंबर का।' तभी गुरु नानकदेव ने एक संत के उत्तर में कहा है-

मन मरा, माया मरी, मर मर गए शरीर।
आशा तृष्णा मार के, नानक भये फकीर।।

करो हंस से प्रीत

करो हंस से प्रीत, जीवन दो घड़ियां।
कौन किसी का मीत, जीवन दो घड़ियां।। टेक।।
हंस नाम से सृष्टि साजे, हंस ही भीतर बाहर विराजे।
कर मन से परतीत, जीवन दो घड़ियां।। 1 ।।
स्वांस स्वांस तुम हरि को ध्यावो, हंस नाम ले मुक्ति पावो।
जप लो हंस पुनीत, जीवन दो घड़ियां।। 2 ।।
हंस नाम उत्तम है प्रभु का, संत शास्त्र मत सबही का।
हंस ही सबका मीत, जीवन दो घड़ियां।। 3।।
प्रातःकाल करो चिंतन तुम, विषय वासना रहित करो मन।
गर्म लगे न शीत, जीवन दो घड़ियां।। 4।।
राम कृष्ण ने इसको ध्याया, व्यास वशिष्ठ पाराशर गाया।
शंकर जानें रीत, जीवन दो घड़ियां।। 5।।
सूर तुलसी इसके मीत, नानक समझें नाम पुनीत।
गीता गाये गीत, जीवन दो घड़ियां।। 6।।
हंस नाम निर्मल है हीरा, समझे सार शब्द कबीरा।
गये जगत पर जीत, जीवन दो घड़ियां।। 7।।

संस्मरण

लाहौर और सिन्ध में हंस नाम की गूंज

हम तो सत्यनाम व्यापारी- श्री हंस जी महाराज

महात्मा सत्यानंद जी ने अपने संस्मरण में बताया कि श्री हंस जी महाराज का लाहौर और सिंध में काफी प्रचार था। सन् 1942 की गुरुपूजा राय बहादुर गया प्रसाद की कोठी में बड़े उत्साह के साथ मनायी गयी थी। राय बहादुर ने चार पृष्ठों के पर्चे छपवाकर दूर-दूर के प्रेमीभक्तों को भी भिजवाए थे। गंबट खैरपुर रिसासत सिंध में एक पंडित शंकर लाल थे, जिन्हें सकूल में श्री महाराज जी ने उपदेश दिया था, उन्हें भी वह पर्चा मिला। श्री महाराज जी प्रवचन दे रहे थे और उस समय गुरुदेव की मोहनी मूर्ति को देखकर सभी प्रेमीभक्त स्नेहमुग्ध थे। गुरुदेव ने आज्ञा दी कि आपलोग एक भजन सुनो और मैं अभी आ रहा हूँ। कमरे में पहुँचते ही गुरुदेव ने बाहर सड़क वाले दरवाजे के पास बैठे कुछ सिंधियों को बुलवाया जिनमें शंकरलाल भी थे। गुरुदेव ने पूछा कि तुम मुझे पहचानते हो? तो वे चुप रहे। गुरुदेव ने अपने सिर से मुकुट उतारकर मुस्कराते हुए फिर पूछा कि तुम मुझे नहीं पहचानते? तो हंसकर दंडवत प्रणाम करते हुए मुग्ध कंठ से पं. शंकरलाल बोले कि हां गुरुदेव, पहचान लिया। श्री महाराज जी! जब आपने उपदेश दिया था, तब मैं स्कूल में पढ़ता था, फिर अध्यापक हो गया। न जाने मैंने आपको कहां-कहां ढूंढ़ा। आज अचानक एक पर्चा मिला जिसे पढ़कर मैं यहां आ गया। हे प्रभु! हम अज्ञानी जीव हैं, पर आपको भुलाना नहीं चाहिए था। इतना कहकर वे रोने लगे। श्री महाराज जी ने आशीर्वाद देकर उन्हें घर भेजा और कहा कि खूब भजन-सुमिरण करना। शंकरलाल जी ने सिंध में खूब प्रचार किया। वहां श्री महाराज जी ने प्रचार के लिए कई महात्मागण भी भेजे। गंबट में एक बहुत अच्छा सुन्दर आश्रम बनाया था, जिसमें हिन्दू और मुसलमान प्रतिदिन पूजा करने आते थे। सब मिलकर आरती गाते थे, बैठकर भजन करते थे और फिर सत्संग सुनकर प्रसाद लेकर घर जाते थे। वहां के चीफ जस्टिस मोहम्मद पीर अलीशाह ने अपनी कोठी में महात्मागण को बुलाकर सत्संग कराया और ढाई सौ मुस्लिम जिज्ञासुओं को उपदेश दिलाया। शाह का श्री गुरुदेव से बड़ा प्रेम था। जब वे गुरुदेव की चर्चा करते थे, तो उनकी आंखें भर आती थीं, हृदय गदगद हो जाता था।

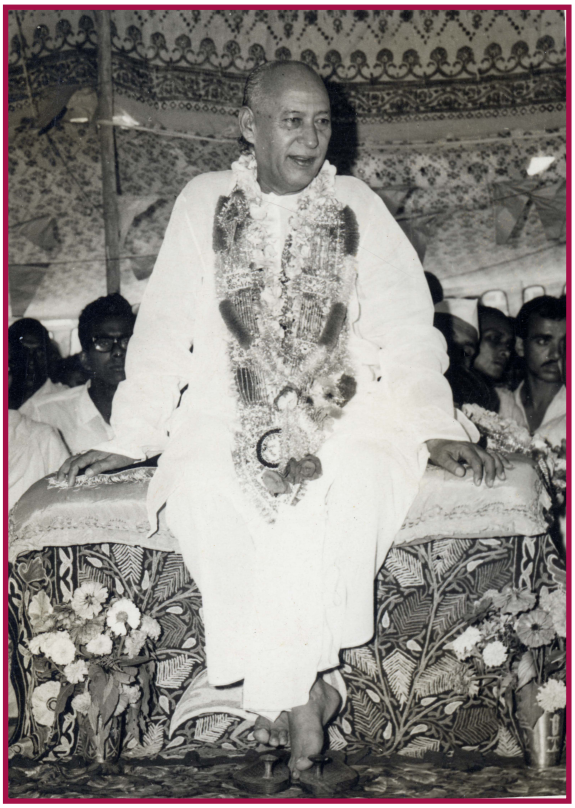

श्री गुरुदेव उस आश्रम में जब आते थे, तो वहां के प्रेमी उत्साह में आकर बड़े प्रेम से उन्हें झूला झुलाते थे एवं उनके दर्शन व सत्संग का लाभ उठाते थे। सिन्धी भाषा में भी कई भजन गाते थे, जो प्रेमीभक्तों ने ही बनाए थे-

आचो मुड जो गलेजा हार।
सद्गुरु आए सुजान,
कुटिया पवित्र भई।

एक बार श्री महाराज जी ने महात्मा सत्यानंद को हैदराबाद सिंध के कुछ पते देकर भेजा और कहा कि इनमें से जो भी मिले खूब सत्संग करना। वहां केवल गोबिंद राम ही जिंदा मौजूद थे। महात्माजी उनसे मिले और उन्हें गुरु महाराज जी का एक पुराना चित्र दिखाकर कहा कि ये मेरे गुरुदेव हैं, इन्होंने आपको बहुत दिन पहले आपके बगीचे में उपदेश दिया था। यदि आप भूल गए हों, तो मैं आपको दुबारा अच्छी तरह समझा दूंगा। गोबिंद राम ने कहा कि ये मेरे दिल के मालिक हैं। इन्होंने जो मुझे उपदेश दिया था, वह मेरे अंदर है, उसे भूलने का तो सवाल ही नहीं, लेकिन आज वे कहां हैं और उनके दर्शन कैसे हो सकते हैं? क्योंकि मैं तो समझता हूँ कि वे मुझे ज्ञान-भक्ति का वरदान देने के लिए ही प्रकट हुए थे। महात्मा जी ने कहा कि आप यहां सत्संग कराइए, जब सत्संग कराएंगे, तो गुरुदेव भगवान यहीं दर्शन दे देंगे।

नाहं वसामि बैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ते तत्र तिष्ठति नारदः।।

"बन्दे जगतगुरुं विष्णुं" जगद्गुरु भगवान विष्णु ने नारद से कहा कि न मैं बैकुण्ठ में रहता हूँ और न योगियों के हृदय में। मेरे भक्त

जहां मेरा गुणगान गाते हैं, मैं वहीं रहता हूँ। गोबिंद राम ने महात्मा जी को वह बगीचा भी दिखाया और वह कमरा भी, जहां उन्हें उपदेश हुआ था। वह बड़ा रमणीक स्थान था। श्री महाराज जी के सत्संग का समय निश्चित कर बड़ा कार्यक्रम रखा गया। सारे शहर में पर्चे बंटवाए गए, जगह-जगह परदे लिखवाकर लगवाए गए, जिनमें लिखा था- सद्गुरुदेव भगवान हंसावतार के दर्शन व सत्संग से लाभ उठाएं।

कुछ दिन पहले हैदराबाद में एक महात्मा था जिसको परमहंस भी कहते थे, उसने बड़ा अत्याचार फैलाया था और गीता की ट्रेनिंग के बहाने बहुत-सी स्त्रियों व लड़कियों को गलत रास्ते पर लगाकर व्यभिचार का अड्डा बना लिया था। हैदराबाद की जनता ने आतंकित होकर उसे भगा दिया था और कुछ स्त्रियां व लड़कियां उसके साथ भाग गई थीं। जनता के कुछ नौजवान लोगों ने यह समझकर कि यह वही हंस है, विरोध में खड़े हो गए और अखबार में निकाला कि हैदराबाद की जनता सावधान! अमुक तारीख को हंस आ रहा है, देखना कहीं उड़ न जाए- जाने न पाए। परंतु जैसे ही श्री महाराज जी मंच पर पधारे, तो इतनी भीड़ उमड़ पड़ी कि मैदान छोटा पड़ गया। श्री महाराज जी के दर्शन कर जनता शांति से बैठ गई और शांतिपूर्वक सत्संग सुना।

श्री हंस जी महाराज जी ने अपने प्रवचन में कहा कि मुझे यहां आकर बड़ी खुशी हुई और मैं उस पर बहुत ही प्रसन्न हूँ, जिसने अखबार में निकाला है; वह मेरे सामने आ जावे और जो चाहे मैं उसे देने के लिए तैयार हूँ; परंतु पंडाल में सन्नाटा छाया हुआ था। थोड़ी देर सत्संग सुनाकर और खड़े होकर श्री महाराज जी ने कहा कि यदि मैं मूर्ति होता और ऐसा ही चित्र बनाकर यदि किसी मंदिर में रखा होता, तो कौन है ऐसा जो मस्तक न झुकाता, वह अपने हाथ उठा दे? परंतु मैं जिंदा मनुष्य रूप में हूँ, तो मेरी बात नहीं मानते हो और बाद में सभी गुण गाते हैं। जितने भी महापुरुष हुए पहले तो उनकी बात नहीं मानी और अब गुण गाते हो।

एक बार श्री महाराज जी सिंधु गंबट में सत्संग के लिए गए। इस गंबट नगर में एक आश्रम था, जिसमें श्री महाराज जी पहले भी कई बार जा चुके थे; लेकिन यह आखिरी बार का सत्संग था। इस आश्रम में गुरुदेव के लिए वहां के भक्तों ने दो सिंहासन बना रखे थे। एक अंदर के कमरे में सोने का सिंहासन था और दूसरा बाहर के कमरे में चांदी का सिंहासन था। श्री महाराज जी का गंबट आश्रम में ही आठ दिन तक लगातार सत्संग हुआ। महाराज जी को स्टेशन से एक शोभायात्रा के रूप में नगर घुमाते हुए वहां के प्रेमीभक्त आश्रम में ले गए। आश्रम में लगातार सत्संग, दर्शन एवं भजन कीर्तन होता रहा। इस आनंद के वातावरण में किसी को समय का आभास ही नहीं रहा। सिंधी प्रेमीभक्तों के भजन बड़ी ही मीठी वाणी में होते थे और वे महाराज जी को "भलड़े भगवान" कहते थे। भलड़े भगवान का अर्थ है- भोले भगवान। गंबट में प्रेमी लोग कच्चे नारियल बहुत लाया करते थे, जिनको श्री महाराज जी प्रसाद में सब प्रेमीभक्तों में बांटा करते थे। पहले श्री महाराज जी दाढ़ी और बाल रखा करते थे।

सिंध के अतिरिक्त श्री महाराज जी का प्रचार क्षेत्र लाहौर भी था। एक बार लाहौर में श्री महाराज जी का कार्यक्रम हुआ। श्री महाराज जी ने लाहौर के सत्संग में एकत्रित लोगों से कहा- "अब तुम लोगों का पुण्य समाप्त हो गया है।" प्रेमीभक्तों को और मेरी भी उस समय यह बात समझ में नहीं आई; किन्तु कुछ समय के बाद जब भारत का बंटवारा हुआ, तब समझ में आया कि ओह! श्री महाराज जी इसीलिए कह रहे थे कि तुम लोगों का पुण्य समाप्त हो गया है।

दिल्ली के अतिरिक्त श्री महाराज जी सत्संग प्रचार के लिए भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जाया करते थे। जैसे-जैसे प्रचार बढ़ने लगा श्री महाराज जी की भी व्यस्तता बढ़ने लगी। प्रचार तो उनका जीवन था। उन्होंने नाम की दुकान सब जगह लगाई। उनकी तो चलती-फिरती दुकान थी और वे सच्चे सौदे के व्यापारी थे। कबीर की वाणी में वे कहा करते थे-

हम तो सत्यनाम व्यापारी।
कोई कोई लादे कांसा पीतल, कोई कोई लौंग सुपारी।
हम तो लादे नाम धनी को, पूरन खेप हमारी।

सच्चे नाम के प्रचार के प्रति उनकी अगाध निष्ठा थी। अपना सर्वस्व लुटाकर भी वे प्रचार कार्य से पीछे नहीं हटते थे। प्रचार के लिए उन्होंने सब प्रकार की कठिनाइयों को सहर्ष सहा। इसे ही वे तप मानते थे। पैदल चलकर, साइकिल में बैठकर, बैलगाड़ी में जाकर उन्होंने गांव-गांव और कस्बे-कस्बे में इस राम नाम के हीरे-मोतियों को बिखेरा और जो भी उनके साथ लगा, उनकी शरण में आया, उसको भी ज्ञान प्रचार में लगा दिया। मानव जाति की इससे बड़ी सेवा और क्या की जा सकती है कि उसे प्रभु के सच्चे नाम का उपदेश देकर उसके लोक और परलोक को संवार दिया जाए।

श्री महाराज जी ने भुने हुए चने और सत्तू खाकर प्रचार किया। जब एक बार जगतजननी श्री माता जी ने उनसे पूछा कि शुरू में आपको ज्ञान प्रचार करने में क्या-क्या कठिनाइयां आईं? तो श्री महाराज जी ने बताया कि अरे, शुरू में कई-कई दिन भूखे रहकर, चने चबाकर, पार्कों में बैठकर, मैं एक-एक व्यक्ति को सत्संग सुनाया करता था, लेकिन मुझे तो इसमें आनंद आया करता था; क्योंकि मैं तो जितना भी गुरु महाराज जी की कृपा से नि:स्वार्थ भाव से इस ज्ञान का प्रचार करता था, मुझे तो उतना ही आनंद आता था। मैंने कभी इसमें थकावट महसूस नहीं की, बल्कि सत्संग के आनंद को मैं बैकुण्ठ के आनंद से भी ज्यादा मानता हूँ।

सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिअ उरगारि

श्री हंस जी महाराज

श्री हंस जी महाराज कहा करते थे कि आत्म विकास में सेवा का बड़ा महत्व है। प्राचीन काल में कई वर्षों तक सेवा करने के बाद तत्वदर्शी और ज्ञानी गुरु इस ज्ञान का उपदेश शिष्यों को दिया करते थे। पहले सेवा करवाते थे और फिर ज्ञान देते थे, तो वह ज्ञान शिष्यों को फलीभूत भी होता था। क्योंकि अगर खेत तैयार हो और तब उसमें बीज बोया जाए, तो उसके उगने की संभावना अधिक होती है, लेकिन अगर खेत ठीक प्रकार से जोता न जाए और उसमें बीज बो दिया, तो वह बेकार भी चला जाता है। गुरु महाराज दयालु होते हैं और कलिकाल के जीवों को थोड़ा ही सत्संग सुनने और सेवा करने पर ज्ञान दे देते हैं। लेकिन केवल मात्र उपदेश लेने से ही अगर किसी का मन काबू हो जाए, फिर सेवा और सत्संग का तो महत्व ही न रहा! इसलिए हमने तुम्हें पहले ज्ञान दे दिया ताकि तुम्हारा विश्वास जम जाए कि यह चीज सच्ची है और तुम सेवा भजन में लग जाओ। अगर सेवा भजन में नहीं लगोगे, तो तुम्हें यह ज्ञान फलीभूत नहीं होगा। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

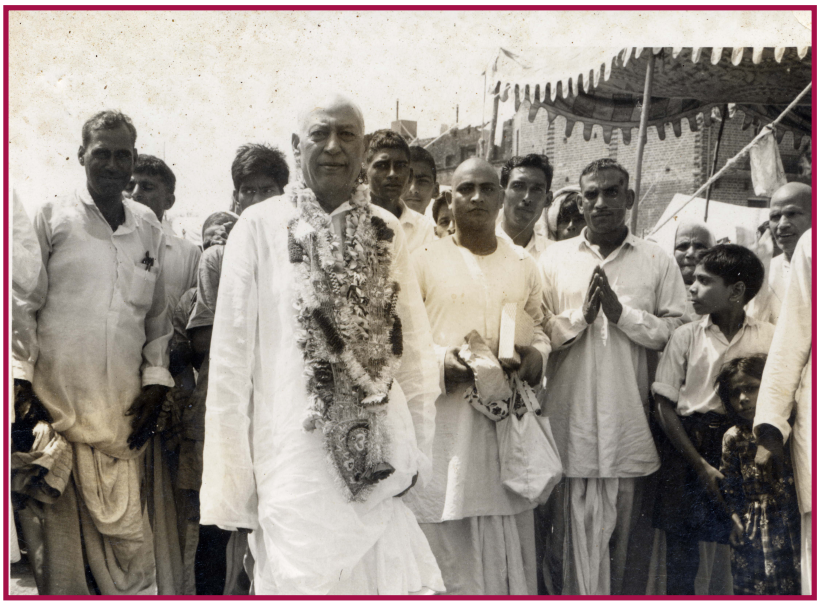

सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिअ उरगारि।

कई बार कुछ प्रेमी जो उपदेश लेने के बाद दर्शन, सत्संग एवं सेवा में नहीं लगते थे, तो श्री महाराज जी उनसे कहा करते थे कि इस उपदेश को शहद लगाकर चाट लो! अरे! अगर उपदेश लेने से ही कल्याण हो जाता और मन रुक जाता तो क्या वह सेवक मूरख थे, जिन्होंने अपना जीवन ही सेवा में लगा दिया? देखो! जो जितनी सेवा करेगा, उतना ही उसका मन भजन में लगेगा। जो सेवा नहीं करेगा, उसका मन भजन में कैसे लग सकता है? रूहानियत तो अपने को मिटा के ही प्राप्त होती है।

सेवा के महत्व पर बोलते हुए श्री महाराज जी ने एक बार सतलोक आश्रम मुरादनगर में सभी प्रेमियों को कहा था कि तुम कैसे सेवक हो? सेवक तो वह है जो सेवा करे। पहले सेवा के बारे में पढ़ो। गुरु नानक देव के बाद गुरु अंगद देव से लेकर दसवें गुरु तक हुए। उन्होंने कैसी-कैसी सेवा की। बस, यही सेवा समझते हो कि साल में एक दिन यहां आ गए। सेवा धर्म सबसे कठिन है और सबसे महान है। राजसूय यज्ञ में जूठी पत्तल उठाने का काम भगवान कृष्ण ने किया। गुरु गोविंद सिंह के जमाने में ऐसे ही बहुत से चेले थे। एक आता था कहता था-

सद्गुरु शिष्य का बंधन काटे, सद्गुरु शिष्य का बंधन काटे।

एक दिन गुरु गोविंद साहब बोले कि आगे भी पढ़ ले। शिष्य जो विषयों से हाथ हटा ले। उसने कहा, वह मेरे वश का नहीं है। भगवान राम, भगवान कृष्ण या हनुमान में यही चीज तो थी जो हममें-तुममें है। कहते हैं कि जैसे फल में सुगंध है, वैसे ही सबमें भगवान है और यह बात नहीं है कि एक बार सेवा की, अनेक जन्म की सेवा होती है, लेकिन एक जन्म की सेवा तो कर लो। एक जन्म तो सेवा करके देखो। तुमने कहा- हम तन, मन, धन तुमको देते हैं। कोई भारत वर्ष का आदमी बता दे कि हमने कभी किसी से एक गिलास पानी के लिए भी कहा हो। पर तुमने क्या सेवा की? लिखा है कि सर्वस्व गुरु की सेवा में लगा दिया जाए, तो वह भी कम ही है। **सीस दिए जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान।** जब सिर दे दिया, तो सिर से ही शरीर है और शरीर से ही सारे संबंध हैं- स्त्री, पुत्र, धन, मकान, जायदाद आदि सब शरीर से ही हैं। स्वामी के सामने समाधि लगाएंगे और कहेंगे कि सेवक हैं हम। यह जितना यहां पंडाल वगैरह लगा है, चंद आदमी होंगे, यहां जिन्होंने यह सब लगाया होगा और बाकी सब तो स्वामी बनकर ही आए हैं। कौन यह सब लाया होगा, कैसे लगाया होगा। कुछ मतलब इससे नहीं। अरे! सेवक का धर्म बड़ा कठिन है और सेवक से ही स्वामी बनता है। जब तक किसी का पुत्र नहीं बनेगा, पिता बन ही नहीं सकता है। सिद्धांत की बात है यह। सेवक पहले बने और सेवा करे, तब स्वामी बनता है। हम यह नहीं कहते कि तुम हमारी सेवा करो। हमको जरूरत नहीं है।

अरे! तुम जो कुछ लाए हो, जहां मैं कहता हूँ रख दो। लेकिन तुम तो समझते हो कि मैं भी पत्थर की मूर्ति हूँ, गुरु महाराज थोड़े

हूँ। देखो, पांव की क्या हालत हो गई है। जब मैं कहता हूँ कि यहां रख दो, तो क्या जरूरत है पांव पर रखने की? जब तुम चढ़ाने के लिए लाए हो, तो जहां मैं कहता हूँ वहां रख दो, हमको नहीं जरूरत है।

अब आजकल तो ज्यादातर लोग गरीबी में हैं। भगवान तो गरीब निवाज है। आजकल तो महंगाई है। तुम कहोगे हमारे पास पैसे भी कम हैं। लेकिन उसमें से भी तुम सेवा करोगे तो तुम्हें अत्यंत लाभ होगा। सेवा मन की तब होगी, जब तन-मन और धन से भी सेवा करोगे। तुम्हारी यह सेवा व्यर्थ नहीं जाएगी, यदि इस जन्म में सिद्धि न भी हुई, तो तुम्हें फिर मनुष्य जन्म ही मिलेगा, क्योंकि ज्ञान अविनाशी है, इसीलिए फिर इस साधन में ही लगोगे। गुरु रूह का बादशाह है। इसलिए फिर चरणों में स्थान देता है। परंतु जो गुरु की अपने मुख से ही निंदा करता है अथवा सेवा से विमुख रहता है, उसकी सद्गति कभी नहीं होगी। जन्म-जन्मांतर चौरासी में ही भ्रमण करता रहेगा। परंतु जो गुरु से भाव की चोरी करता है, उसको तो महान क्लेश भोगने पड़ते हैं। इसलिए भाव की चोरी मत करो; गुरु तुम्हारे धन के भूखे नहीं हैं, वे तो केवल भाव भक्ति से प्रसन्न होते हैं। वह धन अच्छा जो भगवान की भक्ति के प्रचार में लगे और वही बुद्धिमान है, जिसकी बुद्धि भगवान की भक्ति के प्रचार में लगती है। जब बड़े आदमी धन से और शरीर से संतों की सेवा करते हैं, तभी तो छोटों के दिल में भी सेवा भाव जागृत होता है। भगवान ने तो पांडवों के यज्ञ में स्वयं ही पत्तल उठाई थी, सेवा से मान घटता नहीं है, बढ़ता है। नाम जपने वालों की सेवा मिलनी बड़ी दुर्लभ है।

गुरु की सेवा में तन, मन, धन सर्वस्व लगाना चाहिए, यदि सर्वस्व न लगा सके, तो अपनी कमाई में से दसवां भाग और ढाई घंटे नित्य प्रति जरूर ही सेवा सत्संग लगाना चाहिए। जो अपनी कमाई में से भगवान की भक्ति के प्रचार में नहीं लगाता; न सेवा, सत्संग में समय देता है, उसका उद्धार नहीं होगा।

सेवा करने से ही जीवों का उद्धार होता है। इसलिए गुरु सेवा कराते हैं; अन्यथा अष्ट सिद्धि-नव निद्धि तो हाथ जोड़े गुरु महाराज जी की सेवा में खड़ी रहती हैं। सेवा करने की जरूरत तो शिष्य को है, जिससे उसका भला होना है। गुरु की सेवा बातों से नहीं होती। जो गुरु की दया को समझता है, वही गुरु की सेवा में लगता है। गुरु की कृपा बहुत महान है। जो गुरु भक्त हुए हैं, उन्होंने गुरु की आज्ञा का पालन किया है और उन्हीं को उत्तम पद प्राप्त हुआ है।

सद्गुरु मनुष्य रूप में हरि हैं, जिनके वचन से महामोह अज्ञानांधकार का ढेर ऐसे दूर हो जाता है, जैसे सूर्य के उदय होने से रात्रि का अंधकार नष्ट हो जाता है। जिस प्रकार रात्रि में चमकने वाले पदार्थ अपनी-अपनी रोशनी करते हैं, परंतु रात्रि का अंधकार नष्ट नहीं होता, इन नाना मत-मतांतरों या तंत्र-मंत्रों से तुम्हारा अज्ञान दूर नहीं होगा। सद्गुरु से ही नाम, परम प्रकाश और भक्ति का ज्ञान हो सकता है।

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति, पूजा मूलं गुरु पादुका।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।

बिना गुरु कृपा के मोक्ष प्राप्त नहीं होता और न मन टिक सकता है। इसीलिए चेतन गुरु की सेवा-पूजा की जाती है। इसलिए अच्छी बात को अब करो, कल पर मत छोड़ो। रावण ने लक्ष्मण को यही शिक्षा दी थी कि अच्छा काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। भगवान के सच्चे नाम और परम प्रकाश को ही बुरा समझते हो जो समझते हो, कि कल कर लेंगे? ऐसे मनुष्यों के लिए रामचरित मानस में लिखा है कि-

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ।।

जो मनुष्य तन और ऐसा समाज पाकर भवसागर से न तरे, वह कृतनिंदक है, वह मंदमति आत्म हत्यारे की गति को प्राप्त होता है। भगवान की भक्ति के बिना सभी कर्म निष्फल हैं, तुम सुख प्राप्ति के लिए जितने भी कर्म कर रहे हो, सब बेकार हैं। रामचरित मानस में लिखा है कि-

भगति हीन नर सोहइ कैसा। जल बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।
भक्ति हीन सुख कवने काजा। अस विचार बोले खग राजा।।
भगति हीन गुन सब सुख ऐसे। लवन बिना बहु बिंजन जैसे।।

ऐ दुनिया के लोगो! सच्ची बात को जानो! मनुष्य जीवन में उस एक प्रभु को जानना ही धर्म है, परंतु आज धर्म को भूले हुए हैं। सच कहा है कि "यथा राजा तथा प्रजा" जब राजा ही नहीं जानता, तो तुम क्या जानोगे? जिसको कोई नहीं मिटा सके, वह है महान शक्ति।

आज यदि मैं चोटी रख लूं, तो अल्लाह भाग गया, राम आ गया और चोटी के चार बाल कटवा दूं, तो राम भाग गया, अल्लाह आ गया, यह है आजकल का धर्म। नहीं तो, किताबों के दो श्लोक रट लिए और ज्ञानी कहलाने लगे, यह भी कोई धर्म है? आदमी होकर भी विचार नहीं है। बिना ज्ञान के मोक्ष नहीं होता।

आज सब तरफ से आवाज आती है- "कृष्ण भगवान की जय" मंदिर बनवाते हैं, गीता भवन बनवाते हैं, कीर्तन करते हैं, परंतु भगवान कृष्ण जो कहते हैं, वह नहीं समझते। परम प्रकाश रूप भक्ति व परमधाम को जानने के लिए भगवान कृष्ण ने और सभी धर्म-ग्रंथों में संत-महात्माओं ने केवल मनुष्यों को जानने के लिए कहा है, गधे, कुत्तों के लिए नहीं। इसलिए मनुष्य के नाते से, मैं भी वही कह रहा हूँ। उस नाम और प्रकाश को जानो। वह गुरु से ही जाना जाएगा, अज्ञान का इलाज गुरु के ही पास होता है। इसलिए सद्गुरु की खोज करो। राम और कृष्ण जिनको हम तुम भगवान मानते हैं, उन्होंने भी गुरु किया। आप भी गुरु से वह नाम व प्रकाश जान कर मनुष्य जीवन सफल बनाओ।

संगत का प्रभाव

श्री हंस जी महाराज संगत के प्रभाव के बारे में समझाते हुए कहते हैं कि आदमी के अंदर जितने भी दुर्व्यसन होते हैं, उनको वह बाजार से नहीं खरीदता, लेकिन वह जैसी संगत में रहता है, वैसे ही गुण-अवगुण उसके अंदर आ जाते हैं। जिला बिजनौर में सुलताना नाम का एक डाकू हुआ है, वह धनी लोगों के यहां डाके डाला करता था। अगर पुलिस उसका पीछा करती, तो सुलताना उनके आगे रुपये बिखेर देता था, पुलिस रुपये उठाने में लग जाती थी और वह घोड़े पर चढ़ कर भाग जाता था। वह लूट के धन से गरीबों की खूब मदद करता। आखिर, वह समय भी आया, जब वह पुलिस के द्वारा पकड़ा गया। उसने बहुत खून किये थे। सैकड़ों डाके डाले थे। उसके लिए फांसी का हुक्म हो गया। जिसको फांसी पर चढ़ाते थे, तो उससे पूछते थे कि तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है? सुलताना से पूछा, तो उसने कहा कि मैं अपनी मां से मिलना चाहता हूँ। उसकी मां को बुलवाया गया। ज्योंही उसकी मां उसके निकट गई, उसने दांतों से अपनी मां की नाक काट ली। लोग कहने लगे- सुलताना, मरते-मरते तूने अपनी मां के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? सुलताना कहने लगा- जब मैं छोटा था, तो एक दिन स्कूल से किसी की दवात चुरा लाया, मेरी मां ने दवात रख ली। इसके बाद मैं रोजाना छोटी-छोटी चीजें चुराकर लाने लगा और यहां तक नौबत आ पहुँची कि मैं बड़ा भारी डाकू बन गया। यदि पहले ही दिन यह मुझे मारती और डांट कर यह कहती कि आइंदा ऐसा नहीं करना, तो मैं आज फांसी पर नहीं चढ़ता। इसलिए मैंने इसकी नाक काटी है; ताकि दुनियां के लोग अपने बच्चों को ऐसा न करने दें। कोई मखौल में या यार-दोस्तों की संगत में पड़कर शराब पीता है या जुआ खेलता है, तो धीरे-धीरे वह पक्का शराबी और जुएबाज हो जाता है। इसलिए तो कहा है-

संगत कीजे साध की, ज्यों गंधी का बास।
गंधी कछु देवे नहीं, फिर भी बास सुबास।।

लोहा पानी में डूब जाता है, लेकिन लकड़ी की संगत कर जहाज के रूप में हजारों आदमियों को अपने ऊपर बैठाकर पानी पर तैरता है। औरों को भी पार ले जाता है और आप भी उस पार हो जाता है। संगत के प्रभाव से बांस का टुकड़ा मिश्री के भाव बिकता है। अच्छी संगत से अच्छे गुण और बुरी संगत से बुरे गुण आते हैं। मनुष्य योनि तो कर्म योनि है, तुम अब भी सुधरना चाहो तो सुधर सकते हो। भगवान का भजन करना चाहिए, संतों की संगत में जाना चाहिए, तभी आप अच्छे बन सकते हो।

मैं केवल भाव का भूखा हूँ

1960 में श्री महाराज जी ने शक्तिनगर में एक छोटी-सी कोठी खरीद ली और स्थायी रूप से वहीं पर रहने लगे। 26/96 शक्तिनगर की इस कोठी में श्री महाराज जी के दर्शनों के लिए प्रेमियों का हर समय तांता लगा रहता था।

प्रेमीभक्तों का श्री महाराज जी के प्रति एक अनोखा प्रेम और विश्वास था। जब कोई कष्ट उन पर आता था, तो वे उन्हीं का ध्यान करते थे और श्री महाराज जी हमेशा उनकी लाज रखते थे। वे तो भक्त वत्सल ही थे। जब-जब भी कोई भक्त उन्हें याद करता था, तो वे सदैव उसकी रक्षा करते थे। गुरु तो नित्य होते हैं। एक बार प्रेमीभक्तों ने मिलकर प्रार्थना की कि महाराज जी! हम सब आपका जन्मदिन मनाना चाहते हैं! तो श्री महाराज जी ने कहा कि जिसका जन्म दिन मनाया जाता है, उसका मरण दिन भी मनाया जाता है। गुरु तो नित्य होते हैं, उनका जन्म क्या और मरण क्या? श्री महाराज जी ने समझाया कि भक्तों का प्रेम-भाव बना रहे, यही काफी है।

एक बार श्री महाराज जी दर्शन दे रहे थे, एक बुढ़िया माँ के हाथ दस रुपये का नोट था, वह नोट हिला-हिलाकर कह रही थी कि यह लो जी, यह लो जी! जब उसने तीन-चार बार नोट हिलाकर श्री महाराज जी से कहा, तो उन्होंने स्वयं उस बुढ़िया के हाथ से नोट लेकर फाड़ दिया और देखते ही देखते उस नोट के फटे टुकड़ों को भी जला दिया। जब प्रेमीभक्तों ने देखा, तो डर से कांपने लगे जिससे किसी के हाथ से फूल और किसी के हाथ से फल गिर गए। भक्तजनों की दयनीय हालत देखकर श्री महाराज जी को दया आई और वे जमीन पर गिरे फलों को उठाकर खाने लगे। श्री महाराज जी की यह लीला देखकर सब भक्तों का डर दूर हो गया। श्री महाराज जी ने कहा कि तुम यह सोचते होगे कि मेरे पास धन नहीं। अरे, मैं धन का भूखा नहीं हूँ, मैं केवल भाव का भूखा हूँ। मुझे गरीब लोग ही पसंद हैं, क्योंकि वे लोग मेहनत करके सेवा करते हैं। यह जो बुढ़िया माँ है, लखपति है; तभी तो दस रुपये का नोट दिखा रही थी, जैसे मैंने कभी नोट देखा न हो। मुझे अमीरों का दिखावा बिल्कुल पसंद नहीं है।

अन्न धन और वस्त्र भूषण, कुछ न मुझको चाहिए।
आप हो जायें मेरे, बस यही मेरा सत्कार है।।
भाव का भूखा हूँ मैं, भाव ही एक सार है।
भाव से जो भजे, तो भव से बेड़ा पार है।।

गरीब निवाज

एक बार 1956 में जिला बदायूं के ग्राम पिवारी में सत्संग का आयोजन किया गया। जिसमें हजारों की संख्या में जनता श्री महाराज जी के दर्शन तथा प्रवचन सुनने के लिए आई। श्री महाराज जी बैलगाड़ी में बैठकर आए। कच्ची सड़क होने के कारण धूल उड़ रही थी और सारा वातावरण धूल के बादलों से घिरा हुआ था। उस बैलगाड़ी में बैठे हुए श्री महाराज जी ऐसे लग रहे थे, जैसे पूर्णमासी का चंद्रमा अपनी सब कलाओं में परिपूर्ण, सफेद बादलों में चल रहा हो। मई का महीना था और श्री महाराज जी को एक भुसौरी कच्चे कमरे में ठहराया गया, उस भुसौरी में गर्मियों की तपन में दो दिन तक आनंद से रहे और गरीब भक्तों को दर्शन और सत्संग सुनाते रहे। श्री महाराज जी सचमुच गरीब निवाज थे, दरिद्रनारायण थे। गरीब भक्त की दयनीय हालत को देखकर वे द्रवित हो जाते थे और अपने दर्शन तथा कृपा से उसके दुःख को हर लेते थे। इसलिए तो गुरु को हरि कहा गया है।

बैलगाड़ी की सवारी

श्री महाराज जी बिहार के लीला चौराहा गाँव में बैलगाड़ी से पहुँचे और वहां पर सत्संग किया। सारे गांव के लोगों ने मिलकर श्री महाराज जी की आरती उतारी। वहां का एक प्रेमी बहुत गरीब था, श्री महाराज जी उसी के घर में ठहरे। कुछ सेठानी शहर से श्री महाराज जी के खाने के लिए सामान ले आईं और खाना बनाने लगीं। लेकिन श्री महाराज जी ने कहा कि हम यहां खाने नहीं आए। हमें तो इस भक्त का प्रेम खींच लाया है। उस प्रेमी ने श्री महाराज जी को रोते-रोते सत्तू और दलिया खिलाया और अपने सारे गांव की गलियों, जिनमें गंदगी की बदबू आ रही थी, श्री महाराज जी को घुमाया। श्री महाराज जी पूरे गांव की परिक्रमा करके एक फूंस की झोपड़ी में ठहरे। जब श्री महाराज जी को उस गांव से विदाई दी जाने लगी, तो एक बैलगाड़ी को सजाया गया और उसमें श्री महाराज जी को बैठा करके रेलवे स्टेशन तक गांव के प्रेमी छोड़ने गए। लगभग पूरा गांव ही श्री महाराज जी को विदाई देने आया था और गांव के सभी लोग आंसू बहा रहे थे। न जाने श्री महाराज जी को क्या दया आई कि कुछ मील दूर चलने के बाद कहा कि चलो बैलगाड़ी वापस ले चलो, हम एक-दो दिन और इसी गांव में ठहरेंगे। इस बात से गांव के निवासी प्रसन्नता से झूमने लगे। श्री महाराज जी फिर आकर फूंस की झोपड़ी में रुक गये और शाम को धान के खेत में चले गए और धान को बालियों से कच्चे चावल निकाल करके खाने लगे। वहीं बड़ा अद्भुत सत्संग सुनाते रहे और उसके बाद फिर स्टेज पर जाकर ग्राम वासियों को बड़ा मधुर सत्संग दिया और कहा कि तुम्हारा ऐसा प्रेम था कि हमें वापस आकर गांव में रुकना ही पड़ा।

केले के छिलके

लखनऊ में एक प्रेमी एक टोकरी में केले के छिलके ठीक से बंद करके ले आया और कहा- महाराज जी! खाओ, आपको तो केले के छिलके बहुत अच्छे लगते हैं। द्वापर में विदुरानी ने भी तो आपको यही खिलाए थे। श्री महाराज जी ने कहा- अरे, यही दिखावे की भक्ति है। जिस समय विदुरानी ने भगवान कृष्ण को केले के छिलके खिलाए थे, उस समय न तो भगवान कृष्ण यह जानते थे कि मैं केले के छिलके खा रहा हूँ और न ही विदुरानी को यह पता था कि मैं केले के छिलके खिला रही हूँ। अहा! वह कैसी स्थिति थी, जिसमें प्रेम मग्न होकर दोनों भूल गए। लेकिन तुझे तो पता है कि तू केले के छिलके लाया है और मैंने भी देख लिया है, अब बता, क्या तू मुझे खिला सकेगा और मैं खा लूंगा?

प्रेम के आंसू

1958 में श्री महाराज जी अकस्मात लखनऊ पधारे। श्री महाराज जी सूरज रानी वान्चू जो कि कैसरबाग में रहती थीं और पं. जवाहर लाल नेहरू के खानदान से संबंधित थीं, के घर में ठहरे। इस बूढ़ी मां का विचित्र प्रेम श्री महाराज जी के लिए था। घर में श्री महाराज जी को पाकर वह अपने होश-हवाश खो बैठी। उसने श्री महाराज जी के लिए कढ़ी बनाई। सुध-बुध तो खोई हुई थी, कढ़ी में इतनी मिर्च डाल दी कि तोबा, तोबा। श्री महाराज जी को भोग लगाया। श्री महाराज जी ने महात्मा माधोदास को कहा कि यह कढ़ी बुढ़िया मां को प्रसाद रूप में दे दो और कहा कि उससे कुछ मत कहना। बुढ़िया मां ने कढ़ी को चखा, तो उसकी आंख और नाक से पानी बहने लगा। इतनी मिर्चें! श्री महाराज जी के पास जाकर रोने लगी- महाराज जी, मेरे से बड़ी भूल हो गई। मैं तो अपनी सुध-बुध ही खो गई थी। आपने कढ़ी कैसे खा ली? तो श्री महाराज जी ने कहा- हमने खा करके खूब प्रेम के आंसू बहाए, अब तू भी खा करके प्रेम के आंसू बहा।

अपने घर में ही मेहमान

यद्यपि श्री महाराज जी प्रचार के लिए भ्रमण ही करते रहते थे और उस काल में छोटे गांव, कस्बे और नगरों में महाराज जी के सत्संग-प्रवचन होते रहते थे, लेकिन फिर भी यह दिल्ली के प्रेमीभक्तों का सौभाग्य था कि श्री महाराज जी अधिक समय दिल्ली में ही रहते थे। दीवाली हो या होली, कोई-सा भी त्योहार हो, श्री महाराज जी को जाने का समय ही नहीं मिलता था, उन्हें तो भक्तों में ही आनंद आता था। श्री माता जी कहती थीं कि श्री महाराज जी हमारे लिए परदेशी थे। मैं और मेरे बच्चे तो महीनों तक उनका चेहरा देखने को तरसते थे। उनका घर में आना हमारे लिए त्योहार जैसा होता था। वे तो हमारे घर में मेहमान की तरह आते थे और सदैव भक्तों के साथ ही रहते थे। जब श्री महाराज जी कहते थे कि क्या बात है, जब भी मैं घर में आता हूँ, तो तुम लोग मेरे लिए विशेष इंतजाम करते हो? अरे मैं क्या इस घर का सदस्य नहीं हूँ? तो श्री माता जी कहते थे- आप घर के सदस्य होते, तो क्या हमारे साथ त्योहार न मनाते? आप तो हमारे घर में मेहमान की तरह ही आते हैं, जैसे मेहमान एक-दो दिन के लिए आता है और चला जाता है; ऐसे ही आप भी महीनों के बाद दो-चार दिन के लिए आते हैं और फिर अपने भक्तों में चले जाते हैं। आपको तो अपने भक्त ही अच्छे लगते हैं। कभी-कभी श्री माता जी जब उनसे पूछती थीं कि तुम पीतांबरी क्यों पहनते हो और मुकुट क्यों लगाते हो? तो वह हंसकर कहते थे कि तुम नहीं जानती हो, पीतांबरी पहनने से भक्त लोग प्रसन्न होते हैं और उन्हें ध्यान में यह सब दिखाई देता है। भक्तों के कारण ही मैं यह सब करता हूँ। मेरी कोई निजी इच्छा नहीं है।

श्री माता जी, श्री महाराज जी की महानता को सुनाते हुए कहती थीं कि 1966 की व्यासपूजा की बात है, सतलोक आश्रम में श्री महाराज जी कमरे में बैठे हुए थे। मैंने उनसे कहा कि कुछ लोग आपके दर्शन करना चाहते हैं और चरणामृत चाहते हैं, तो कहने लगे- तू ही क्यों नहीं दर्शन दे देती और चरणामृत दे देती? तू भी तो उनकी गुरु माता है। तो मैंने कहा कि कहां तुम्हारा चरणामृत और कहां मेरा चरणामृत! तो कहने लगे कि क्या बात है, तेरे में और मेरे में क्या फर्क है? श्री माता जी ने कहा- देखो महाराज जी, कल कोई बात हो गई तो कहने लगोगे कि वाह! तुम तो अपना ही चरणामृत देने लगीं। तो श्री महाराज जी हंसकर कहने लगे- यह तो तुम्हारी भूल है। अरे, तुम्हें ही प्रचार में आगे आना है और इन भक्तों को संभालना है। मैं तो चाहता हूँ कि तुम सब जगह जाओ, प्रेमीभक्तों को दर्शन दो और उन्हें सत्संग सुनाओ। यह तो तुम्हें आज नहीं तो कल करना ही पड़ेगा।

एकबार श्री महाराज जी ने शक्तिनगर कोठी में प्रेमीभक्तों को समझाते हुए कहा- सच्चा ज्ञान मिलने पर भी अभ्यास और वैराग्य की जरूरत है। जो एकाएक ही यह चाहे कि मेरी समाधि लग जावे, तो इसमें खतरा है। मोटर अस्सी-नब्बे मील की रफ्तार से जा रही हो और एक साथ पूरा ब्रेक लगा दिया जावे, तो गाड़ी उलट जावेगी। गाड़ी चकनाचूर हो जाएगी। बैठने वाले भी मर सकते हैं।

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल आए।।

माली पहले पौधा लगाता है, समय पर खाद तथा पानी देता है, गुड़ाई करता है, बाड़ करता है, पेड़ को सर्दी-गर्मी से बचाता है। समय पर उसमें फूल भी आते हैं, ढेर के ढेर फल भी होते हैं। आज बीज बोकर, आज ही तो उसका फल नहीं मिलेगा, कुछ तो इंतजार करना पड़ेगा। कई लोग कल उपदेश लेकर जाते हैं और आज आकर कहते हैं कि महाराज जी! हमारा मन भजन में नहीं लगता। मन को लगाने के लिए उपदेश दिया गया है। पर उससे पहले सत्संग, सेवा तथा भजन-अभ्यास की जरूरत बताई है। जो जिसकी संगत में रहता है, उसे उसी बात की याद रहती है। जो जिसकी संगत में रहता है, उसे उसी की बात याद रहती है। जो जिसकी सेवा करता है, उसी का चिंतन या भजन करता है। जिसने सारी आयु परिवार की सेवा में गुजारी है और उपदेश ग्रहण करने पर भी ठीक पहले की तरह लगा हुआ है, उसका मन कैसे एक साथ काबू हो जाएगा? गुरु की आज्ञा पालन करने से मन मरता है। मान लो तुम यहां से उठना चाहते हो, गुरु की आज्ञा उठने की नहीं है, यदि तुम गुरु की आज्ञा का पालन करके नहीं उठते तो मन मर गया। जो सेवक होता है, आज्ञा भी उसी को दी जाती है। जो आज्ञा को पालन नहीं कर सकता, वह सेवक भी नहीं है, न उसका कभी मन मरेगा। कुछ लोग समझते हैं कि अगर सेवा भक्ति में लग जाएंगे, तो संसारी काम बिगड़ जाएंगे। भगवान की भक्ति लगने से कोई भी काम नहीं बिगड़ सकता। जो ऐसा सोचकर भक्ति और सेवा से पीछे हटते हैं, वे भक्ति और सेवा की महिमा को नहीं समझते। भगवान की भक्ति का कभी नाश नहीं होता।

दिव्य संदेश परिषद की स्थापना

श्री महाराज जी के भक्त उनके प्रचार कार्य को एक संगठित रूप देने लगे और "दिव्य संदेश परिषद" के नाम से श्री महाराज जी का संगठित रूप से प्रचार होने लगा। गीता भवन, कमलानगर दिल्ली में परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज का एक महान सत्संग आयोजित किया गया जिसमें श्री महाराज जी ने निष्पक्ष भाव से लोगों के सामने अपने विचार रखे। उन्होंने कहा-

संसार में भगवान को मानने वाले दो प्रकार के मनुष्य हैं- एक वे जो भगवान को निराकार या निर्गुण मानते हैं, दूसरे के वे लोग जो भगवान को साकार या सगुण मानते हैं। महर्षि स्वामी दयानंद जी का सिद्धांत है कि परमात्मा निराकार है, इंद्रियातीत और कल्पना से परे है। परंतु कल्पनातीत, अगोचर तथा मन, बुद्धि से परे होते हुए भी जिस काल में, जिसने भी जाना आखिर कैसे और किस चीज से जाना? क्योंकि इंद्रिय और मन, बुद्धि के द्वारा तो ईश्वर को जान ही नहीं सकते। यदि केवल मुँह से कह दिया कि भगवान निराकार है, तो यह भी कल्पना ही तो है। यदि यह कहो कि भगवान का ज्ञान समाधि में होता है, तो ध्यान, ध्याता, ध्येय का एक होना समाधि कहलाता है। अष्टांग योग के- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि अंग हैं; इसमें सातवां अंग ध्यान का है। जब भगवान को निराकार कहते हैं, तो निराकार का ध्यान कैसे होगा? यदि हम आकाश जैसी सूक्ष्म वस्तु को निराकार रूप में कल्पना करें तो आकाश भी सगुण है। आकाश का रंग नीला और गुण शब्द है। निराकार की जगह पर साकार या सगुण वस्तु का ध्यान करते रहे, तो गुण वाली वस्तु का तो ध्यान हुआ, निर्गुण ब्रह्म का ध्यान कहाँ हुआ? माया का ही ध्यान हुआ। आखिर मनुष्य अपनी चित्तवृत्ति को कहां टिकाए? क्योंकि मन को टिकाने का ही नहीं पता, जब मन को एकाग्र करने का ज्ञान ही नहीं, तो मन एकाग्र कैसे होगा? जब मन ही एकाग्र नहीं तो समाधि कहां? और जब समाधि नहीं तो परमात्मा का ज्ञान कहां! और फिर बिना ज्ञान के यह कह देना कि परमात्मा निराकार है, तो ऐसा कहने वाले की भूल है। सगुण भगवान के सगुण उपासक, अर्थात मंदिरों में नाना प्रकार की मूर्तियों की सेवा-पूजा करते हैं और वहां के पुजारी कहते हैं कि आओ, भगवान के दर्शन करो, झांकी निहारो। परंतु गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण चंद्र जी ने कहा है कि-

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्यमेयोगमैश्वरम्।।

हे अर्जुन! तू मुझे इन आंखों से नहीं देख सकता। मैं तुझे दिव्य तथा अलौकिक नेत्र देता हूँ, जिनके द्वारा तू मेरे प्रभाव को देख सकेगा। मेरा यह शरीर जिसको तू इन आंखों से देख रहा है, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार करके आठ तत्वों का बना हुआ है। जब हम इन आंखों से भगवान को देख ही नहीं सकते, तो ये पुजारी लोग किस वस्तु का दर्शन करा रहे हैं और लोग किस वस्तु का दर्शन कर रहे हैं?

अकलमंद बुद्धिमानो! जब भगवान की कोई भी इंद्रिय नहीं है, ऐसा करके मानते हो, तो तुम्हारी बात या प्रार्थना सुनने के लिए भगवान के कान कैसे बन गए? इसीलिए देखो, स्वार्थ और मनमानी को त्यागकर सच्चाई को समझो और स्वयं जज बनकर न्याय करो कि वास्तविकता क्या है, भगवान के सच्चे स्वरूप को कैसे जाना जा सकता है।

एक दिन इंद्र ब्राह्मण का भेष बना के नदी के किनारे बैठ गया और हाथ से रेत उठा-उठाकर नदी में फेंकने लगा। अकस्मात वहाँ उसका पुत्र वहां आ निकला, कहने लगा- हे ब्राह्मण! यह क्या करते हो? ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि मैं रेत डालकर पुल तैयार करना चाहता हूँ। उसने कहा कि कभी ऐसे भी पुल तैयार हो सकता है? जो रेत तुम नदी में डाल रहे हो, वह तो बह जाती है, पानी के बहाव में नहीं ठहर सकती। ब्राह्मण ने कहा कि ठीक है, जिस प्रकार रेत फेंकने से पुल तैयार नहीं हो सकता है, इसी प्रकार बिना गुरु के ज्ञान नहीं हो सकता।

हरदोई उत्तर प्रदेश जेल में सत्संग
जो भगवान का भजन करेगा, वह संसाररूपी जेल से छूट जायेगा

-श्री हंस जी महाराज

श्री हंस जी महाराज का एक बार हरदोई उत्तर प्रदेश जेल में सत्संग हुआ। उन्होंने कैदियों को संबोधित करते हुए अपने मार्मिक सत्संग में कहा- जैसे कि तुम जेल में हो, तो कुछ न कुछ खराब काम करके आए हो। इसी तरह से यह सारा संसार ही जेलखाना है। हम इसके अन्दर कुछ न कुछ खराब काम करके आये हैं, कुछ न कुछ बुराई करके आये हैं। भलाई करते, तो इसमें क्यों आते? इस जेलखाने में कोई चोरी करके आया होगा, कोई डाकू होगा, कोई खून करके आया होगा। कुछ ऐसे भी हैं, जो कि तनख्वाह के लालच से आते हैं। कुछ और भी उद्देश्य से आते हैं। राजा भी है, जो कभी घूमने की इच्छा से यहां आ जाता है। एक हम भी हैं कि न तो तनख्वाह के लालच से आये हैं, न किसी जुर्म में आए हैं और न घूमने की इच्छा से आये हैं, यहां आने का हमारा कोई भी निजी स्वार्थ नहीं है। केवल तुम्हारी भलाई के लिए आये हैं, ताकि हम तुम्हें कुछ अच्छी बातें सुनायें जिससे तुम्हारी आत्मा का कल्याण हो। संसार रूपी जेल में जो सन्त आते हैं, कर्मबद्ध होकर नहीं आते, बल्कि वे जीवों को जन्म-मरण रूपी बन्धन से छुड़ाने आते हैं। आप लोगों में से किसी ने भूल से, किसी ने जान-बूझकर और किसी ने हेकड़ी से कोई न कोई अपराध किया ही है। तभी तो जेलखाने में आये हो। लेकिन अब इससे कैसे छुटोगे? जब तुम ईश्वर का भजन करोगे, तभी छूट पाओगे। क्योंकि ईश्वर ही एक ऐसी ताकत है, जो सब दु:खों से छुड़ा सकता है। इसलिए सभी को ईश्वर का भजन करना चाहिए। यहां जेल में तुमसे कुछ न कुछ काम कराया जाता होगा। महात्मा लोग कहते हैं कि हाथों से काम करो और दिल से भगवान के नाम का स्मरण करो।

भगवान कृष्ण ने गीता में समझाया कि अन्तकाल में जो मेरा स्मरण करते हुए शरीर त्यागता है, वह मुझको ही प्राप्त होता है। बुराई करने का फल बुराई और भलाई करने का फल सदा ही भला होता है, लेकिन अब तो जो कुछ भी हो गया, वह हो ही गया, आगे के लिए ही विचार करना है। अब भी जो तुम भगवान की याद में लग जाओगे, तो आगे के लिए सुधर जाओगे। ईश्वर की कृपा हो गई जो मनुष्य शरीर मिल गया, वैसे आवागमन के चक्र में तो सभी हैं। लख चौरासी रूपी जेल में भी सभी बन्द हैं, लेकिन अब भी तुम लोग भगवान का भजन करने की नहीं सोचोगे, तो इससे बुरा और क्या होगा?

तुम भगवान का भजन करोगे, तो तुम्हारे भी अपराध माफ हो जायेंगे। जैसे कोई भी बाप अपने बेटे का बुरा नहीं चाहता, वैसे परमात्मा बड़े दयालु हैं, वे सभी पर दया रखते हैं। भगवान कभी भी हमारा बुरा नहीं चाहते; लेकिन हम लोगों के कर्म ही ऐसे हैं, जिसके अनुसार जीव को सांप, बिच्छू, कानखजूरा और सूअर आदि नीच योनियों में जाना पड़ता है। तुम्हारे भी कर्म ऐसे बने जो कुटुम्ब-परिवार, भाई-बन्धु सभी छूट गये और यहां जेल भोगनी पड़ी। सभी लोग अपने-अपने कर्मों का फल भोगने के लिए ही संसार रूपी जेल में आये हुए हैं। जो भगवान का भजन करेगा, वह संसाररूपी जेल से छूट जायेगा, वर्ना कभी भी इस जेल से छुटकारा नहीं होगा।

संसार में कोई भी किसी का नहीं है, सभी अपने स्वार्थ से प्रीति रखते हैं। भगवान का सच्चा नाम सभी के हृदय में है। वह नाम सोलह स्वर और छत्तीस व्यंजनों से परे है, वह नाम लिखाई-पढ़ाई या बोलने में नहीं आता, अगर तुम भी उस नाम को जानकर सुमिरोगे, तो जीवन अच्छा हो जायेगा। जो जन्म भगवान का नाम स्मरण करने के लिए मिला था, तुमने इसे साधारण समझ कर बुरे कामों में लगा दिया।

जो तुमने पापों की गठरी जमा की है, यह तुम्हें ही ढोनी पड़ेगी, इसका नतीजा तुम्हें ही भोगना पड़ेगा। पापों की गठरी भारी हो गई, तो तुम्हारी गर्दन टूटेगी, लेकिन अब भी तुम भगवान की भक्ति में लग जाओगे, तो आगे के लिए दु:खों से बच जाओगे। सवेरे का भूला शाम को घर आ जावे, तो भूला नहीं कहलाता है। क्योंकि एक तो आराम से सोता है और दूसरे आगे के लिए चक्र से छूट जाता है, यह मौका हाथ से निकल गया तो फिर पछताना ही है।

आप लोगों ने अभी मनुष्य शरीर की कीमत को नहीं समझा है। इतना जीवन सांसारिक भोगों के पीछे गंवाया है। तुमने चोरी या डाकाजनी की होगी। इसलिए कि दुनिया के मजे लूटेंगे, लेकिन नतीजा क्या हुआ? जेल में बन्द हो गए, पैरों में बेड़ी पड़ गईं, अब यहां से कहीं जा भी नहीं सकते। लेकिन जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। मैं तो आप लोगों को इन दु:खों से बचाने का उपाय बताने आया हूँ। आप लोग हमारी सच्ची बातों पर विचार करोगे और उन सच्ची बातों पर अमल करोगे, तभी तुम कष्टों से छूटोगे, वर्ना कभी भी तुम्हारा छुटकारा नहीं होगा।

श्री समरथ हंस सद्गुरु परिपूर्ण अवतार

एक आश्रम सेविका अपना भाव व्यक्त करते हुए कहती हैं कि श्री समरथ हंस सद्गुरु परिपूर्ण अवतार, नेति-नेति अगम पारब्रह्म सच्चिदानंद, ईश्वर के भी ईश्वर, भक्तों के कारण चौंसठ कला लिया भूमंडल पर अवतार, जिनकी महिमा अपरंपार। कौन जाने उनका पार, स्वयं ईश्वर भी श्री हंस सद्गुरु महाराज की कल्पना नहीं कर सकते। इतने सुंदर, महान, विशाल प्यारी माधुरी मूरत, मनहरण वाली सूरत, परम सुंदर श्री हंस जी महाराज थे। मेरी क्या हस्ती है? श्री सरस्वती जी भी सच्चे बादशाह की सुंदरता का वर्णन नहीं कर सकतीं। घुंघराले बाल, मस्तक परम विशाल और मस्तक से भी परम प्रकाश की आभा निकलती थी। सुंदर नासिका, नेत्र विशाल, भृकुटी की महिमा अपार, कपोलन पर भक्त जाएं बलिहार, होठों की लाली प्यारी अपरंपार, गले में हीरा लगे अपार गलहार, सोहे जिसे निरख भक्त होते निहाल। श्री चरण कमल की शोभा पर श्री माता जी सहित सब भक्त, बाई-महात्मा होते बलिहार। करते जय-जयकार। श्री चरण कमल पद्म पराग। जिससे लज्जित होता था गुलाब। श्री हंस जी महाराज के पीछे भक्तों के दल दौड़े पूरी रफ्तार।

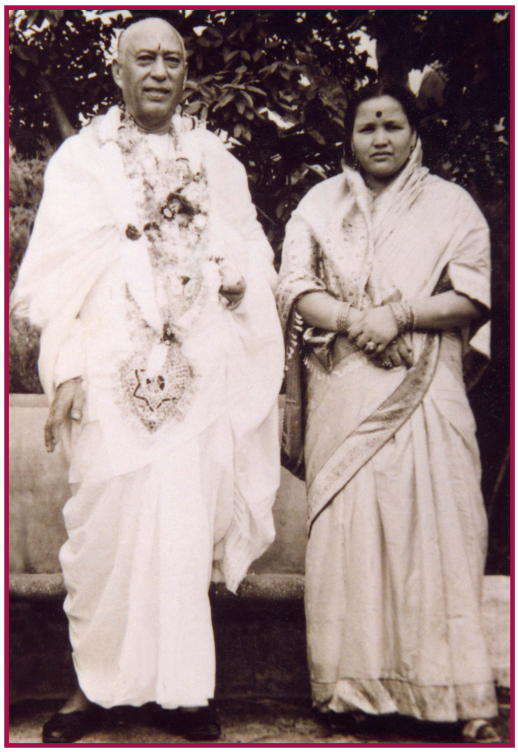

देहरादून में सेवा करते समय मैं उनके नित्य चार झांकी में दर्शन करती थी। कभी तो युवा अवस्था में, कभी वृद्धावस्था में, कभी गोरे, कभी प्रकाशरूप में, प्रकाश तो उनेक अंग-अंग से निकलता था, नजर नहीं ठहरती थी। सुमिरन तो मेरे श्री सद्गुरुदेव हंस जी महाराज मुझे खरची देते थे और भावभक्ति जागीरी तो मुझे बादशाह जी की सेवा में मिलती थी। जब सच्चे दिल से भक्त पुकारते थे, मुकुट की झांकी देखने के लिए, तब सच्चे बादशाह जी कृपा करते थे। कलगी की चमक ही शरीर की सुध-बुध भुला देती थी। मुकुट की छवि की महिमा कौन वर्णन कर सकता है, पीताम्बरी पोशाक पर नजर नहीं ठहरती थी, आंखें टकटकी लगाए रहती थीं, पलक नहीं झपकती थी। शरीर में रोमांच हो जाता था, माधुरी मनोहर प्यारी झांकी श्री महाराज जी की तन-मन हर लेती थी। श्री हंस जी महाराज साक्षात ज्ञान स्वरूप थे, प्रकाश रूप थे, शक्ति के साक्षात् रूप थे, प्रेम के साक्षात रूप थे, दया के तो आप सागर थे, दानियों में महान थे। मालिक ने जो दान दिए, उनका कोई भी वर्णन नहीं कर सकता है। चौदह लोक की संपदा का मालिक ने खजाना खोल दिया, जो दिन-रात लुटाया, पूरे विश्व को दिया।

जो गरीब माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई आर्थिक समस्या के कारण नहीं कर पाते थे, श्री महाराज जी उन बच्चों को बी.ए. व एम.ए. कराते थे। पढ़ाई-लिखाई का पूरा-पूरा खर्च देते थे। जिनके मकान गिर जाते थे, तो वे श्री महाराज जी के पास आकर रोते थे कि हमारे पास रहने को मकान नहीं है, तो उनको रुपये देकर उनका मकान बना देते थे। जो गरीब अपनी लड़की की शादी नहीं कर सकते थे, श्री महाराज जी उन गरीब लड़कियों की शादी करवाते थे। इस प्रकार श्री महाराज जी अपने भक्तों के कष्टों को दूर कर देते थे। जब श्री महाराज जी ने महान यज्ञ किया था, तब इतना दान दिया था कि निर्धन धनी बना दिए थे, वस्त्र, सोने के आभूषण, मेवा, फल व अन्न का दान भरपूर दिया था। ब्राह्मणों को नाना प्रकार के व्यंजन खिलाये और खूब सजी हुई गौएं दान में दी थीं।

उस्तरा, जिला-बुलंदशहर के राजा कुंवर प्रह्लाद सिंह ने अपनी मां और धर्मपत्नी रानी बलवीर कौर के साथ श्री महाराज जी से प्रार्थना कि आप हमारे गांव पधारें। जब श्री महाराज जी भक्तों के साथ वहाँ गए, तो उनका बहुत स्वागत किया। श्री महाराज जी एवं भक्तों को भोजन के थाल परोसे गए, तो भक्त लोग भोजन नहीं कर रहे थे, तब राजा के पूछने पर श्री महाराज जी बोल पड़े कि ये सब नाराज हो गए हैं। तुम्हारी माता जी आकर के सब भक्तों से हाथ जोड़कर पैर छूकर माफी मांगकर प्रार्थना करें, तभी सब भक्त भोजन करेंगे। रानी बलवीर कौर ने हाथ जोड़कर माफी मांगी और भोजन ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की। श्री महाराज जी मुस्कुराने लगे। श्री महाराज जी ने भक्तों को यह लीला दिखाई कि देखो, रानीपन का अभिमान नहीं है, कितना भाव है इनके अंदर। इसी भाव की वजह से तो प्रभु वहां पधारे थे। ■

श्री हंस जयन्ती-125 वर्ष के सुअवसर पर
विशाल जनकल्याण समारोह

सभी भगवद्भक्तों को जानकर अत्यंत हर्ष होगा कि हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर) के तत्वावधान में **सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज की जयन्ती-125 वर्ष** के सुअवसर पर **8 व 9 नवम्बर, 2025 (शनि.-रवि.) सायं 6 से 9 बजे तक प्रतिदिन ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में विशाल जनकल्याण समारोह आयोजित किया जा रहा है।** इस समारोह में **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी** के अध्यात्म-ज्ञान तथा जनकल्याण पर सारगर्भित प्रवचन होंगे।

योगीराज परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

साथ ही अनेक आत्मानुभवी महात्मा/बाईगण, प्रबुद्धजनों, समाज सेवकों एवं विद्वानों का प्रवचन और प्रसिद्ध भजन गायकों द्वारा भजन-गायन भी होगा। इस अवसर पर आत्म-जिज्ञासुओं को अध्यात्म-ज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।

अत: आप इस समारोह में सपरिवार पधारकर आत्म-कल्याण का मार्ग प्राप्त कर अपने मानव जीवन को सार्थक बनायें। प्रेमी भक्तगण 8 नवम्बर को ही हरिद्वार पहुंचें तथा 9 नवम्बर को कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात अपनी वापसी की व्यवस्था करके आएं। इस कार्यक्रम की सूचना अपने आसपास के क्षेत्र के प्रेमी भक्तों को अवश्य दीजिएगा।

नोट: सभी प्रेमी भक्त अपने साथ अपना आधारकार्ड और मतदाता पहचान पत्र अवश्य लेकर आयें।

निवेदक:-

हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर)

संपर्क सूत्र- 8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V. पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा।

www.youtube.com/@hanslokTV
https://www.facebook.com/Hanslok

श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं एवं जूनियर सेवकों को सूचित किया जाता है कि **सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज की जयन्ती-125 वर्ष** के सुअवसर पर **8 व 9 नवम्बर, 2025** को **सायं 6 से 9 बजे तक प्रतिदिन ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में विशाल जनकल्याण समारोह का आयोजन किया जा रहा है।** इस अवसर पर **श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं तथा जूनियर सेवकों का 7 से 10 नवम्बर, 2025 तक "सेवा शिविर" लगाया जा रहा है** जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 7 नवम्बर, 2025 को अपराह्न 3 बजे से श्री हंसलोक सेवकों का **'मार्गदर्शन शिविर'** रखा गया है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अत: सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 6 नवम्बर की शाम तक अथवा 7 नवम्बर, 2025 की प्रात: 8 बजे तक हरिद्वार पहुँच कर अपनी-अपनी सेवा संभाल लें। जनकल्याण समारोह को सफल बनाने में आप सभी का विशेष रूप से सहयोग अपेक्षित है।

निवेदक

श्री हंसलोक सेवक संगठन

नवम्बर, 2025 के पर्व-त्योहार

□1 नवम्बर शनिवार- प्रबोधिनी एकादशी □2 नवम्बर रविवार- तुलसी विवाह/चातुर्मास व्रत समाप्त □5 नवम्बर बुधवार- कार्तिक पूर्णिमा/गुरु नानक जयंती/ देव दीपावली □8 नवम्बर शनिवार- श्री हंस जयंती 125 वर्ष □14 नवम्बर शुक्रवार- बाल दिवस □15 नवम्बर शनिवार- उत्पन्ना एकादशी □25 नवम्बर मंगलवार- विवाह पंचमी □30 नवम्बर रविवार- झण्डा दिवस

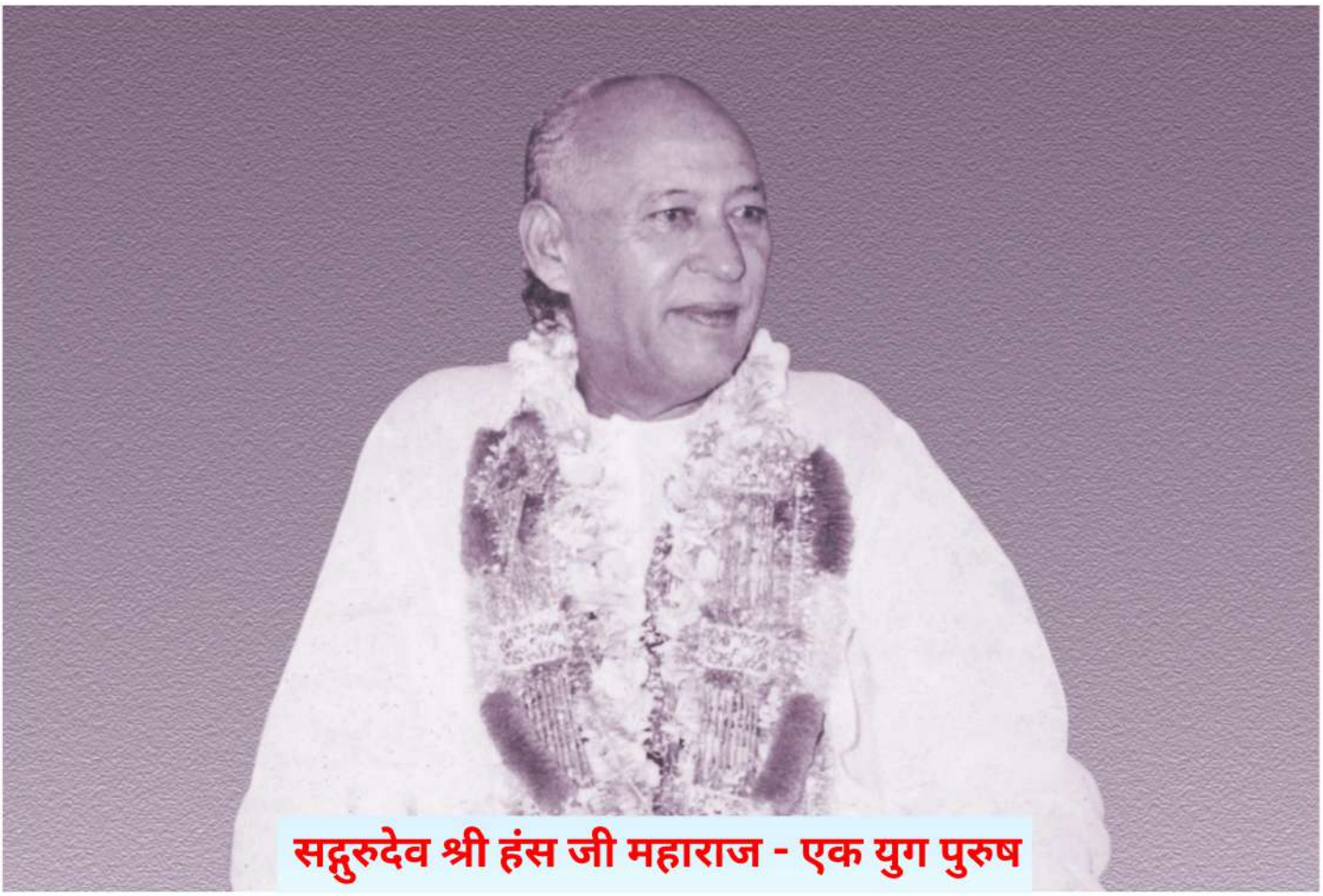

सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज - एक युग पुरुष

योगिराज श्री हंस जी महाराज का प्रादुर्भाव **8** नवंबर, **1900** को गाड़-की-सेड़िया, जिला - पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड में हुआ था। आपके पिता जी श्री रणजीत सिंह रावत और माताजी का नाम श्रीमती कालिंदी देवी था। आप एक प्रथम पुरुष हैं, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को अपने गुरु की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने में समर्पित कर दिया था।

योगिराज श्री हंस जी महाराज के जीवन की विशेषताएं: गुरु की शिक्षा- श्री हंस जी महाराज ने अपने गुरु श्री स्वामी स्वरूपानंद जी से आत्मज्ञान की दीक्षा प्राप्त की, जिन्होंने उन्हें आत्म-साक्षात्कार की दिशा में अग्रेसित किया। धार्मिक प्रशिक्षण- अपने गुरु से दीक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने विभिन्न धार्मिक संस्थाओं एवं आध्यात्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया । डिवाइन लाइट मिशन- श्री हंस जी महाराज ने डिवाइन लाइट मिशन की स्थापना की, जिसके माध्यम से उनके संदेश को विश्वभर में पहुँचाने में मदद मिली। सत्संग, सेवा और सुमिरण- उन्होंने मुख्यतः सत्संग, सेवा और सुमिरण पर ज़ोर दिया, साथ ही उन्होंने अपने अनुयाइयों को प्रेम, करुणा और सेवा का पाठ पढ़ाया।

योगिराज श्री हंस जी महाराज की शिक्षाएँ: आत्म-साक्षात्कार- श्री हंस जी महाराज ने अपने शिष्यों को आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध कराकर आत्म-साक्षात्कार की ओर अग्रेसित किया। प्रेम और करुणा- उन्होंने प्रेम और करुणा पर ज़ोर दिया और अपने अनुयाइयों को दीनहीनों एवं जरूरतमंदों की सेवा करने के लिए प्रेरित किया। धार्मिक समानता- उन्होंने धार्मिक समानता की वकालत की और अपने अनुयाइयों को सभी धर्मों का सम्मान करने के लिए कहा।

योगिराज श्री हंस जी महाराज का प्रभाव: विश्वभर में प्रभाव- आज योगिराज श्री हंस जी महाराज का प्रभाव विश्वभर में है और प्रेमीभक्तों के बीच वे एक युगपुरुष के रूप में जाने जाते हैं। आत्मिक जागरण- उन्होंने अपने शिष्यों को आत्मिक जागरण की दिशा की ओर प्रेरित किया और उन्हें अपने वास्तविक स्वरूप को जानने पर बल दिया।

आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।